भारत दर्शन

बाहु किला 01 भाग-01

यह किला 325 मीटर की औसत ऊंचाई पर स्थित है, जो तवी नदी के चट्टानी बाएं किनारे पर स्थित है। किले के चारों ओर के वन क्षेत्र को "बाग-ए-बाहु" नामक एक सुव्यवस्थित पार्क में विकसित किया गया है, जहाँ से जम्मू शहर का एक शानदार दृश्य देखा जा सकता है।

1 बाहु किला, जम्मू और कश्मीर का एक ऐतिहासिक किला है।
2 यह किला तवी नदी के बाएं किनारे पर बना है।
3 बाहु किले का निर्माण मूल रूप से राजा बाहुलोचन ने करवाया था।
4 बाद में डोगरा राजाओं ने इस किले में बदलाव कराये।
5 यह किला 3000 साल से भी अधिक पुराना है।
6 यह किला जम्मू का सबसे पुराना किला है।
7 किले परिसर में बावे वाली माता का लोकप्रिय महाकाली मंदिर है।
8 किले के परिसर में बाग-ए-बहू नाम का एक शाही उद्यान है।
9 इस किले में नवरात्रों के दौरान बहू मेला लगता है।
10 इस किले को जम्मू और कश्मीर का विरासत स्थल माना जाता है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

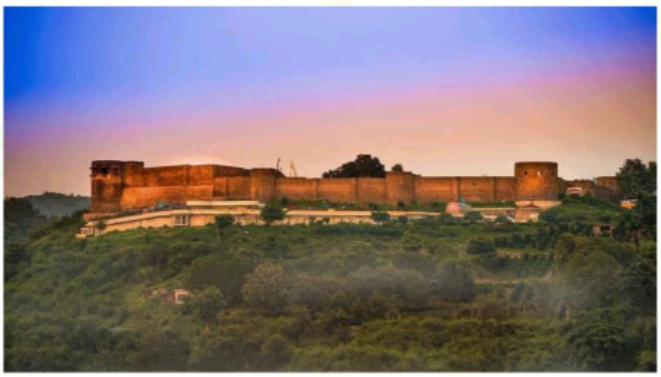

भारत दर्शन

बाहु किला 02 भाग-02

1 परमार राजपूतों के महाराजा ने तवी नदी के तट पर प्राचीन किले का निर्माण करवाया था , ऐसा माना जाता है कि जम्मू के पारंपरिक संस्थापक जम्बू लोचन के भाई बाहु लोचन ने इसकी मरम्मत करवाई थी।
2 किले से जुड़ा सबसे पहला ऐतिहासिक रिकॉर्ड राजा जम्बू लोचन और उनके भाई बाहु लोचन का है, जो सूर्यवंशी राजाओं के जम्मू राजवंश के एक शक्तिशाली शासक अग्निगर्भा द्वितीय के पुत्र थे। अग्निगर्भा के 18 पुत्रों में सबसे बड़े बाहु को जम्मू शहर की स्थापना और किले का निर्माण करने का श्रेय दिया जाता है। पहले के किले की संरचना को वर्षों में संशोधित कर एक मजबूत किलेबंद संरचना में बदल दिया गया था।
3 वर्तमान किले का पुनर्निर्माण, संभवत: प्राचीन किले के समान स्थान पर, कपूर देव के पोते औतार देव द्वारा 1585 में किया गया था।
4 किले की संरचना जम्मू के पुराने शहर के सामने, 325 मीटर (1066 फीट) की ऊंचाई पर स्थित है। गढ़वाली संरचना में चूने और ईंट मोर्टार से निर्मित बलुआ पत्थरों से बनी मोटी दीवारें हैं। इसमें मोटी दीवारों से जुड़े आठ अष्टकोणीय टॉवर या बुर्ज हैं। टावरों में हाउस गार्ड के लिए बाड़े हैं। मुख्य प्रवेश द्वार हाथियों को किले में जाने की अनुमति देने के लिए उपयुक्त है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

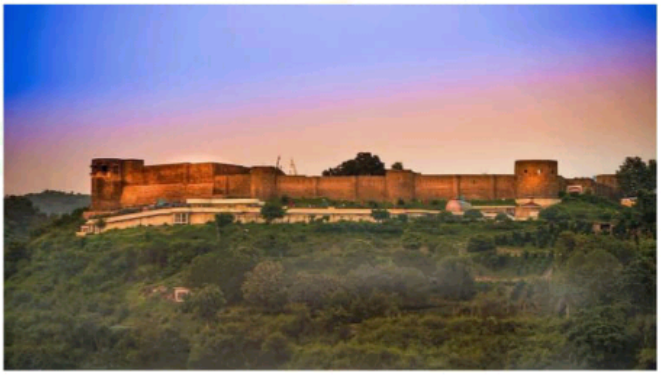

भारत दर्शन

पुरा महादेव 03 भाग-01

1 बागपत, उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख शहर है, जो अपनी ऐतिहासिक धरोहर और धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है।

2 पुरा महादेव मंदिर का इतिहास बहुत पुराना है और इसे भारतीय धार्मिक परंपराओं से गहरे रूप में जोड़ा जाता है।

3 यह स्थान प्राचीन काल में एक प्रमुख तीर्थ स्थल था, जहाँ लोग आकर भगवान शिव की पूजा करते थे।

4 माना जाता है कि यह मंदिर उसी स्थल पर स्थित है, जहां भगवान शिव ने प्राचीन काल में अपनी उपासना की थी।

5 पुरा महादेव का संबंध महाभारत काल से भी जोड़ा जाता है। यह कहा जाता है कि इस मंदिर के आसपास का क्षेत्र महाभारत के समय में एक प्रमुख युद्ध भूमि थी और यहीं पर पांडवों ने भगवान शिव से आशीर्वाद प्राप्त किया था।

6 पुरा महादेव मन्दिर का वास्तु शास्त्र के हिसाब से बहुत ही आकर्षक और साधारण है। यह मंदिर गाँव के बाहरी इलाके में स्थित है, जिससे यहाँ का वातावरण शांति और सुकून से भरा हुआ है।

7 मन्दिर के आसपास का प्राकृतिक सौंदर्य और शान्त वातावरण भक्तों को मानसिक शान्ति प्रदान करता है। यह स्थान न केवल श्रद्धालुओं के लिए एक पूजा स्थल है, बल्कि एक ध्यान और विश्राम स्थल भी है, जहाँ लोग अपनी मानसिक थकावट को दूर कर सकते हैं। जितेन्द्र कुमार, बागपत

भारत दर्शन

पुरा महादेव 04 भाग-02

8 मन्दिर का आन्तरिक भाग बहुत ही सुन्दर और साधारण है, जिसमें भगवान शिव की मूर्ति स्थापित है।

9 साथ ही यहाँ एक विशाल शिवलिंग भी है, जिस पर भक्त जल, दूध, और बेलपत्र चढ़ाकर अपनी श्रद्धा अर्पित करते हैं।

10 मन्दिर के पास एक छोटे से तालाब का भी अस्तित्व है, जिसे पवित्र माना जाता है। यहां स्नान करने से भक्तों को शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

11पुरा महादेव न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह स्थल अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यहाँ पर हर साल होने वाले मेलों और उत्सवों में स्थानीय लोग अपनी पूरी श्रद्धा और उल्लास के साथ भाग लेते हैं।

12 यह स्थल बागपत की सांस्कृतिक धरोहर का अहम हिस्सा बन चुका है, जहाँ विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ होती हैं।

13 यहां पर आयोजित होने वाले मेले और उत्सव न केवल धार्मिक होते हैं, बल्कि स्थानीय कला, संगीत और नृत्य का भी प्रदर्शन होता है। इन आयोजनों में शामिल होकर लोग अपनी संस्कृति से जुड़ते हैं और एक-दूसरे से आत्मीय संबंध स्थापित करते हैं।

जितेन्द्र कुमार, बागपत

भारत दर्शन

गुलमर्ग 05 भाग- 01

1- जम्मू-कश्मीर का एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है. यह हिमालय की प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है।
2- गुलमर्ग का मतलब होता है, 'फूलों का मैदान'. यह श्रीनगर से करीब 60 किलोमीटर दूर है।
गुलमर्ग की खास बातें-
3- गुलमर्ग में दुनिया की सबसे ऊंची केबल कार, गुलमर्ग गोंडोला है।
4- गुलमर्ग में घुड़सवारी की जा सकती है।
5- गुलमर्ग में बर्फ़बारी के लिए दिसंबर और जनवरी सबसे अच्छा समय होता है।
गुलमर्ग जाने का सबसे अच्छा समय -
6- अप्रैल से जून के बीच का समय गुलमर्ग जाने के लिए सबसे अच्छा माना जाता है।
7- मई में गुलमर्ग का मौसम सुहावना रहता है।
गुलमर्ग के बारे में कुछ और रोचक बातें-
8- गुलमर्ग का पुराना नाम 'गौरीमार्ग' था।
9- यूसुफ़ शाह चक ने इसका नाम बदलकर गुलमर्ग रखा था।
10- गुलमर्ग में कई हरे-भरे जंगल, नदियां, हिमनद झीलें, और घाटियां हैं।

प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

गुलमर्ग 06 भाग- 02

भौगोलिक स्थिति

11- भारत के जम्मू और कश्मीर (केंद्र शासित प्रदेश) का एक हिल स्टेशन है। इसका मूल नाम गौरीमर्ग (Gaurimarg) / गौरीमत्ठः (संस्कृत भाषा मूल में है), जिसे १६वीं शताब्दी में युसुफ शाह चक ने बदलकर गुलमर्ग कर दिया।

12- इसकी सुंदरता के कारण इसे धरती का स्वर्ग भी कहा जाता है। यह देश के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक हैं।

13- फूलों के प्रदेश के नाम से मशहूर यह स्थान बारामूला ज़िले में स्थित है। यहाँ के हरे भरे ढलान सैलानियों को अपनी ओर खींचते हैं। 14- समुद्र तल से 2730 मी. की ऊँचाई पर बसे गुलमर्ग में सर्दी के मौसम के दौरान यहाँ बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं।

गुलमर्ग का खास आकर्षण-

15- गुलमर्ग के मुख्य आकर्षणों में से एक गुलमर्ग गोंडोला है, जो दुनिया की सबसे ऊंची केबल कार है।

16- गोंडोला का पहला चरण पर्यटकों को 8530 फीट की ऊंचाई पर कोंगडोरी स्टेशन तक ले जाता है और गोंडोला का दूसरा चरण 12293 फीट की ऊंचाई तक जाता है।

प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

पटनीटॉप 07 भाग–01

1. पटनीटॉप जम्मू कश्मीर के उधमपुर जिले में स्थित एक पहाड़ी पर्यटक स्थल है। यह हिमालय के शिवालिक बेल्ट में स्थित एक खूबसूरत पठार पर बना है।
2. पटनीटॉप का नाम "पाटन दा तालाब" से लिया गया है जिसका मतलब है राजकुमारी का तालाब।
3. पटनीटॉप स्किइंग, ट्रैकिंग और प्राकृतिक झरनों के लिए प्रसिद्ध है।
4. नवंबर से मार्च तक का समय पटनीटॉप घूमने का सबसे अच्छा समय है इस दौरान मौसम ठंडा और हवादार रहता है।
5. पटनीटॉप में बर्फबारी दिसंबर में शुरू होती है और फरवरी तक जारी रहती है।
6. पटनीटॉप की ऊंचाई समुद्र तल से करीब 2024 मीटर है यह उधमपुर से 47किलोमीटर और जम्मू से 112 किलोमीटर दूर है।

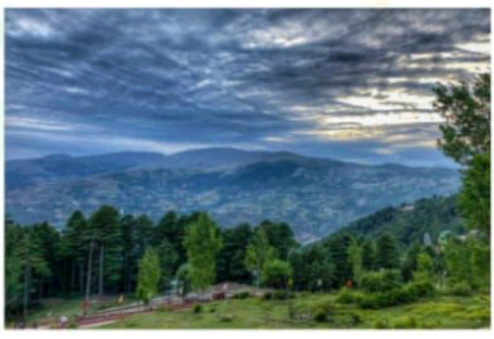

भारत दर्शन

पटनीटॉप 08 भाग–02

1. पटनीटॉप जम्मू और कश्मीर का आश्चर्य जनक हिल स्टेशन है यह शहर अपने आस–पास के लुभाने प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यटन स्थलों के लिए प्रसिद्ध है।
2. सनासर झील, नाथा टॉप, स्काईव्यू पटनीटॉप, पटनीटॉप पार्क, शुधमहादेव मंदिर, बिल्लो की पौड़ी, शिवगढ़ आदि पटनीटॉप में घूमने की जगहें है ।
3. पटनीटॉप की शांत पहाड़ी की चोटी पर सबसे लोकप्रिय आकर्षणों में से एक सनासर झील है, जिसे इसकी प्राकृतिक सुंदरता के कारण "मिनी गुलमर्ग" के नाम से जाना जाता है।
4. अपने घने जंगलों, हरे-भरे घास के मैदानो और आसपास के पहाड़ों के मनोरथ दृश्य के लिए पटनीटॉप प्रसिद्ध है।
5. पटनीटॉप सूखे मेवे, कश्मीरी हस्तशिल्प और पशमीना शॉल के लिए प्रसिद्ध है।
6. पटनीटॉप में नाग मंदिर के पास स्थानीय स्मृति चिन्ह और हस्तशिल्प मिलते हैं।

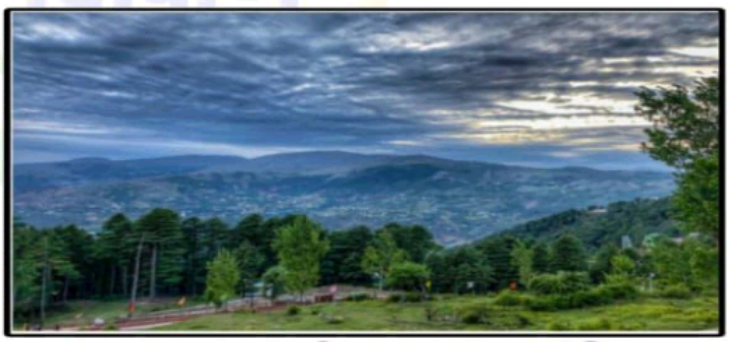

सुनीता यादव (बाराबंकी)
#9458278429

भारत दर्शन

लाक्षागृह वार्णावर्त (बरनावा)

09

भाग-01

1- मेरठ से करीब 35 किलोमीटर आगे बड़ौत जाते समय कुछ ऊंचे टीले पर एक जीर्ण-शीर्ण सी संरचना नजर आती है।
2- ऊपर जाने पर टूटी हुई दीवारों जैसी स्थिति और एक कमरे में टूटी दीवारों पर जले हुए निशान और नीचे धूल मिट्टी का ढेर।
3- यही वो जगह है, जिसे पांडव काल का लाक्षागृह कहा जाता है।
4- चूंकि इस जगह के आसपास जगह का नाम बरनावा है, लिहाजा इसे बरनावा लाक्षागृह कहा जाता है। इसके नीचे एक गुफा है।
5- बरनावा या वार्णावर्त मेरठ से 35 किलोमीटर दूर और सरधना से 17 कि.मी. बागपत जिला में स्थित एक तहसील है।
6- इसकी स्थापना राजा अहिबरन ने बहुत समय पूर्व की थी।
7- यहां महाभारत कालीन लाक्षाग्रह चिन्हित है।
8- लाक्षाग्रह नामक इमारत के अवशेष यहां आज एक टीले के रूप में दिखाई देते हैं।
9- महाभारत में कौरव भाइयों ने पांडवों को इस महल में ठहराया था और फिर जलाकर मारने की योजना बनायी थी।
10- किन्तु पांडवों के शुभचिंतकों ने उन्हें गुप्त रूप से सूचित कर दिया और वे निकल भागे।
11- वे यहां से गुप्त सुरंग द्वारा निकले थे।
12- ये सुरंग आज भी वहां स्थित है, जो हिंडन नदी के किनारे पर खुलती है।

जितेन्द्र कुमार, बागपत

भारत दर्शन

लाक्षागृह वार्णावर्त (बरनावा)

10

भाग-02

13- इतिहास के अनुसार पांडव इसी सुरंग के रास्ते जलते महल से सुरक्षित बाहर निकल गए थे।

14- जनपद बागपत में बरनावा तक पहुंचने वाली कृष्णा नदी का यहां हिंडन में मिलन होता है।

15- लाक्षागृह एक भवन था जिसे दुर्योधन ने पांडवों के विरुद्ध एक षड्यंत्र के तहत उनके ठहरने के लिए बनाया था।

16- इसे लाख से निर्मित किया गया था ताकि पांडव जब इस घर में रहने आएं तो चुपके से इसमें आग लगा कर उन्हें मारा जा सके।

17- यह वार्णावर्त (वर्तमान नाम बरनावा) नामक स्थान में बनाया गया था। पर पांडवों को यह बात पता चल गई थी।

18- वे सकुशल इस भवन से बच निकले थे।

19- लाक्षागृह के भस्म होने का समाचार जब हस्तिनापुर पहुँचा तो पाण्डवों को मरा समझ कर वहाँ की प्रजा अत्यन्त दुःखी हुई।

20- दुर्योधन और धृतराष्ट्र सहित सभी कौरवों ने भी शोक मनाने का दिखावा किया और अन्त में उन्होंने पाण्डवों की अन्त्येष्टि करवा दी।

21- उल्लेखनीय है कि पांडवों ने जो पाँच गाँव दुर्योधन से माँगे थे वह गाँव पानीपत, सोनीपत, बागपत, तिलपत, वरुपत (बरनावा) यानि पत नाम से जाने जाते हैं।

जितेन्द्र कुमार, बागपत

भारत दर्शन

पीर खो मन्दिर गुफा

11

भाग-01

1-पीर खो मंदिर 'मंदिरों के शहर' के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है।
2- पूर्णिमा, अमावस्या और एकादशी पर यहां बड़ी संख्या में भक्त आते हैं। यहां मनाए जाने वाले महत्वपूर्ण त्यौहार शिवरात्रि, पूर्णिमा और श्रावण पूर्णिमा या रक्षा बंधन हैं।
3- यह शिवलिंग एक छोटी लेकिन शांत गुफा के अंदर स्थित है, जो सफेद संगमरमर के आयताकार मंच से सुशोभित है।
4- काले पत्थर के शिवलिंग को तांबे के सांप या नाग से सजाया गया है और एक चांदी की चादर जलरी या योनि को ढकती है, जिसके ऊपर एक तांबे का बर्तन लटका हुआ है, जिससे शिवलिंग पर लगातार पानी डाला जाता है।
5- शिवलिंग के शरीर का निचला हिस्सा और अन्य विशेषताएं पुरमंडल मंदिर परिसर के मंदिर के समान हैं और संभवतः शुरुआती डोगरा शासन की उसी अवधि से संबंधित हैं।
6- पीर खो मंदिर और पीर मीठा मंदिरों के शहर में स्थित दो मंदिर हैं। अपुष्ट ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार, राजा अजायब देव के शासनकाल के दौरान, संत सिद्ध गरीब नाथ के लिए पीर नामक मंदिर का निर्माण 15वीं शताब्दी ईस्वी में किया गया था।
7- दोनों गुफाएँ ज़मीन से बीस से तीस फ़ीट नीचे हैं। पीर खो गुफा मंदिर पुराने शहर के स्थानीय लोगों के बीच काफ़ी श्रद्धा रखता है।

संकलन कर्ता- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

पीर खो मन्दिर गुफा 12 भाग-02

7- भगवान शिव का मंदिर जिसे जामवंत गुफा के नाम से भी जाना जाता है, एक पुराने ऐतिहासिक स्थान से संबंधित है।
8- मेहराबदार प्रवेशद्वार मंदिर परिसर की ओर जाता है और संगमरमर और मोज़ेक फर्श के साथ एक लंबे बरामदे में जाता है, जो जुल्लाका मोहल्ला से होकर पक्का डंगा के विपरीत दिशा में एक और प्रवेश द्वार की ओर खुलता है।
9- प्रांगण के बाईं ओर तीन शिखर हैं जिनमें से दो आधुनिक और एक प्राचीन है।
10- कम गोल धारीदार गुम्बद या गुम्बद पत्थर की कलश और एक उल्टे कमल के साथ आधुनिक संरचना के साथ विलीन हो गया है। 11- यह गुफा मंदिरों के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है, जो तवी नदी के बोल्डर समूह जमा में आगे काटे गए हैं, जो लगातार बाढ़ और सदियों से पानी के घटने के कारण बने हैं।
12- गुफ़ाओं की ओर जाने वाले गोल गुंबददार प्रवेश द्वार को छत पर सुंदर बाद के मुगल या डोगरा शैली के चित्रों और गुंबद के केंद्र में पुष्प रूपांकनों से अलंकृत किया गया है।
13- दीवार और छत के परिधि पर डोगरा शैली की पेंटिंग से चित्रित स्तंभित मेहराबदार आले जम्मू प्रांत के उधमपुर जिले में राम नगर पैलेस परिसर के रूपांकनों के समान हैं।
14- रंग योजना और चित्रकला की शैली से यह साबित होता है कि ये चित्र 19वीं शताब्दी के मध्य की जम्मू चित्रकला शैली के हैं, जिनमें नील रंग पर जोर दिया गया है।

संकलन कर्ता- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

रघुनाथ मन्दिर

13

भाग-01

1 रघुनाथ मंदिर (जम्मू कश्मीर), जिसमें सात मंदिर हैं, जिनमें से प्रत्येक का अपना 'शिखर' है (शिखर, एक संस्कृत शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'पहाड़ की चोटी', जो उत्तर भारत में हिंदू मंदिर वास्तुकला में उभरती हुई मीनार को संदर्भित करता है) जम्मू शहर में स्थित उत्तर भारत के सबसे बड़े मंदिर परिसरों में से एक है।

2 महाराजा गुलाब सिंह और उनके बेटे महाराज रणबीर सिंह ने 1853-1860 की अवधि के दौरान इस मंदिर का निर्माण कराया था। मंदिर में कई देवताओं की प्रतिमाएं स्थापित हैं, लेकिन मुख्य देवता भगवान राम हैं, जो भगवान विष्णु के 'अवतार' हैं।

3 यह मंदिर तब लोगों की नज़रों में आया और इस पर कड़ी नज़र रखी जाने लगी, जब 24 नवंबर, 2002 को, जब हिंदू इस परिसर में पूजा कर रहे थे, तब 'फिदायीन' (आतंकवादियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली आत्मघाती रणनीति) आतंकवादी हमला हुआ, जिसके परिणामस्वरूप कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई और कई श्रद्धालु घायल हो गए।

4 विशाल रघुनाथ मंदिर में सात ऊँचे शिखर हैं, जहाँ हर तीर्थस्थल का अपना शिखर है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर महाराणा रणबीर सिंह का चित्र और भगवान हनुमान की छवि इस स्थान को और भी भव्य बनाती है।

5 इसमें एक गैलरी भी है, जहाँ विभिन्न लिंगम (भगवान शिव का लिंग रूप) और शालिग्राम रखे गए हैं। रघुनाथ मंदिर में हिंदू देवताओं की लगभग सभी छवियाँ शामिल हैं, जो मंदिर वास्तुकला में एक असामान्य अवतार है। मंदिर के उपदेशों और अनुष्ठानों में सुबह और शाम की आरती दोनों शामिल हैं।

6 रघुनाथ मंदिर की वास्तुकला में मुगलकालीन चिनाई की झलक देखी जा सकती है। नक्काशी और मेहराब असाधारण रूप से शानदार हैं, जो हर किसी का ध्यान आकर्षित करते हैं।

7 मंदिर परिसर में एक पुस्तकालय है, जिसमें दुर्लभ संस्कृत पुस्तकें और पांडुलिपियाँ हैं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

रघुनाथ मन्दिर

14

भाग-02

8 रघुनाथ मंदिर में सात मंदिर हैं। मंदिर परिसर रघुनाथ को समर्पित है, जो राम का दूसरा नाम है।

9 प्रवेश द्वार पर सूर्य की मूर्ति है, जो विष्णु का एक और रूप है। इसे अष्टकोणीय आकार में 5 फीट (1.5 मीटर) ऊँचे एक उठे हुए मंच पर बनाया गया है।

10 आंतरिक पैनलों में जम्मू स्कूल ऑफ पेंटिंग की बहुतायत है
जिसमें हिंदू महाकाव्यों रामायण, महाभारत और भगवद गीता के चित्र हैं, जिनका प्रतिनिधित्व गणेश, कृष्ण, शेषशायी विष्णु (विष्णु लेटे हुए) जैसे देवताओं द्वारा किया गया है और साथ ही सीता स्वयंवर दृश्य (राजकुमारियों की एक कुलीन सभा में से सीता अपने पति को चुनती हैं) को दर्शाती एक बड़ी पेंटिंग है ।

11 पौराणिक कथाओं से संबंधित विषयों के अलावा, कुछ पेंटिंग धर्मनिरपेक्ष पहलुओं से संबंधित हैं, जैसे कबीर , एक संत, जो बुनाई में लगे हुए हैं
और डोगरा और सिख समुदायों के सेना के जवान हैं ।

12 मुख्य मंदिर में, राम की मूर्ति, जो तत्कालीन राजा और डोगरा लोगों के पारिवारिक देवता हैं, गर्भगृह (गर्भगृह) में स्थापित है।

13 मंदिरों में बहुत बड़ी संख्या में शालिग्राम (जीवाश्म अम्मोनाइट पत्थर
जो विशेष रूप से नेपाल में गंडकी नदी से प्राप्त किए गए हैं - विष्णु
का एक वैष्णव (हिंदू) प्रतीक) भी स्थापित हैं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

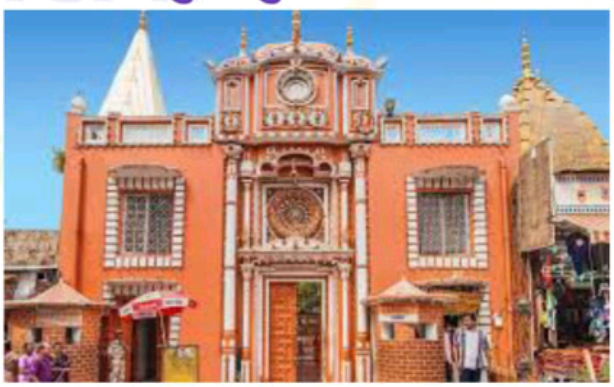

भारत दर्शन

शिव खोड़ी 15 भाग-01

1- शिव खोड़ी भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य के रियासी ज़िले में स्थित एक हिन्दू धार्मिक महत्व वाली गुफा है। जोकि जम्मू से करीब 90 किलोमीटर दूर है।
2- यह संगर गाँव में स्थित है और शिव जी को समर्पित है।
3- इस गुफा में प्राकृतिक रूप से शिवलिंग बना हुआ है जिसकी ऊंचाई करीब साढ़े तीन से 4 फीट के बीच है।
5- इस गुफा में भगवान के अर्ध नारिश्वर रूप के दर्शन होते हैं, यह शिवालिक पर्वतमाला में स्थित है।
6- वर्ष के बाराह महीनों में शिव-भक्तों के लिए एक प्रमुख श्रद्धा-केन्द्र है।
7- महाशिवरात्रि में यहाँ एक बड़ा मेला आयोजित होता है।
8- शिव खोड़ी के पूरे क्षेत्र में अति-प्राचीन मन्दिरों के कई अवशेष बिखरे हुए हैं।

मृदुला वर्मा, कानपुर देहात

भारत दर्शन

शिव खोड़ी 16 भाग-02

1- लोक श्रुतियों में कहा गया है कि सियालकोट (वर्तमान में यह स्थान पाकिस्तान में है) के राजा सालवाहन ने शिव खोड़ी में शिवलिंग के दर्शन किए थे और इस क्षेत्र में कई मंदिर भी निर्माण करवाए थे, जो बाद में सालवाहन मंदिर के नाम से प्रसिद्ध हुए।

2- इस गुफा में दो कक्ष हैं। बाहरी कक्ष कुछ बड़ा है, लेकिन भीतरी कक्ष छोटा है।

3- बाहर वाले कक्ष से भीतरी कक्ष में जाने का रास्ता कुछ तंग और कम ऊंचाई वाला है जहां से झुक कर गुजरना पड़ता है।

4- आगे चलकर यह रास्ता दो हिस्सों में बंट जाता है, जिसमें से एक के विषय में ऐसा विश्वास है कि यह कश्मीर जाता है। यह रास्ता अब बंद कर दिया गया है।

5- दूसरा मार्ग गुफा की ओर जाता है, जहां स्वयंभू शिव की मूर्ति है।

6- गुफा की छत पर सर्पाकृति चित्रकला है, जहां से दूध युक्त जल शिवलिंग पर टपकता रहता है।

मृदुला वर्मा, कानपुर देहात

भारत दर्शन

अमर पैलेस 17 भाग-01

1 अमर महल पैलेस भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य के जम्मू में एक महल है । महल को अब एक संग्रहालय में बदल दिया गया है।

2 महाराजा अमर सिंह, एक डोगरा राजा द्वारा कमीशन किया गया, महल उन्नीसवीं शताब्दी में एक फ्रांसीसी वास्तुकार द्वारा एक फ्रांसीसी शैटॉ की तर्ज पर बनाया गया था।

3 महल को संग्रहालय के रूप में उपयोग करने के लिए करण सिंह द्वारा हरि-तारा चैरिटेबल ट्रस्ट को दान कर दिया गया था।

4 इसमें 120 kg वजन का एक सुनहरा सिंहासन, एक पहाड़ी लघुचित्र , कांगड़ा लघु चित्र , 25,000 प्राचीन पुस्तकों का एक पुस्तकालय, कई दुर्लभ कला संग्रह, और शाही परिवार के चित्रों का एक बड़ा संग्रह सहित कई प्रदर्शन हैं।

5 अमर महल जम्मू में तवी नदी के दाहिने किनारे पर नदी के एक मोड़ पर स्थित है। तवी नदी को सूर्यपुत्री तवी के नाम से भी जाना जाता है (सूर्यपुत्री एक हिंदी शब्द है जिसका अर्थ है 'सूर्य देवता की बेटी')।

6 नदी के बाएं किनारे पर महल के उत्तर में शिवालिक पहाड़ियाँ या पर्वतमालाएँ एक शानदार दृश्य प्रदान करती हैं, जिसके बीच में तवी नदी बहती है। यह शहर के केंद्र में, कश्मीर की सड़क पर , हरि निवास पैलेस होटल के नाम से प्रसिद्ध हेरिटेज होटल के पास स्थित है ।

7 अमर महल पैलेस की योजना 1862 में एक फ्रांसीसी वास्तुकार द्वारा बनाई गई थी। हालांकि, यह 1890 के दशक तक नहीं बना था। स्वर्गीय महाराजा हरि सिंह (राजा अमर सिंह के बेटे) की पत्नी महारानी तारा देवी 1967 में अपनी मृत्यु तक इस महल में रहीं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

अमर पैलेस 18 भाग-02

8 इसके बाद, उनके बेटे करण सिंह ने भारत की एक रियासत जम्मू के पूर्व शासक के रूप में भारत सरकार द्वारा उन्हें दिए गए प्रिवी पर्स को स्वेच्छा से सरेंडर कर दिया और अपने माता-पिता की याद में इस संग्रहालय को स्थापित करने के लिए धन का उपयोग किया।
9 संग्रहालय का उद्घाटन भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 13 अप्रैल 1975 को किया था।

10 संग्रहालय में प्रदर्शित डोगरा-पहाड़ी पेंटिंग 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जम्मू और हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा कला विद्यालय की रचना थी।
11 महल के अन्दर महाभारत महाकाव्य के दृश्यों और शाही यादगार के पहाड़ी चित्रों को दर्शाया गया है। डोगरा शासकों का एक सुनहरा सोफा , जिसका वजन 120 किलोग्राम शुद्ध सोना है, कोनों में सुनहरे शेरों के साथ जड़ा हुआ है, संग्रहालय के एक षट्कोणीय कमरे में रखा गया है, जिसे केवल कांच से ढके खिड़की के शीशे के माध्यम से देखा जाता है क्योंकि मुख्य द्वार सुरक्षा कारणों से बंद रखा जाता है।
12 एमएफ हुसैन , जे. स्वामीनाथन, जीआर संतोष, बिकाश भट्टाचार्जी, राम कुमार , लक्ष्मण पई जैसे कुछ प्रसिद्ध भारतीय कलाकारों की कलाएँ भी संग्रहालय में प्रदर्शित हैं।13 दीर्घाओं में से एक में, नल दमयन्ती (सैंतालीस लघु चित्रों का एक सेट) जैसी हिंदू महाकाव्य कहानियों के चित्र दर्शाए गए हैं ।
14 दशावतार चित्रों जम्मू और कश्मीर के डोगरा शासकों के पारिवारिक चित्र प्रवेश गैलरी में दरबार हॉल में प्रदर्शित हैं।
15 संग्रहालय में एक विशेष कक्ष, जो कभी महारानी (जिसे बाद में महाराजमाता कहा गया) तारा देवी का आवास था , को उसके मूल रूप में संरक्षित और प्रदर्शित किया गया है, जहाँ एक चांदी की चादर, उस काल के फर्नीचर, तस्वीरें, भारत के ताज की सजावट जो उन्हें 1945 में भेंट की गई थी, उनके निजी वस्त्र और अद्वितीय विक्टोरियन स्नानघर प्रदर्शित हैं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

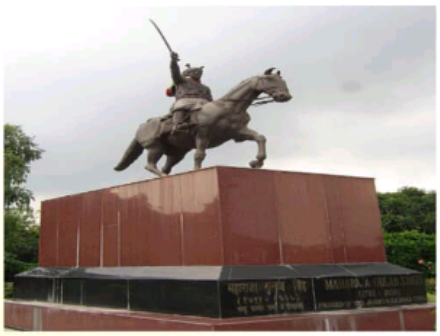

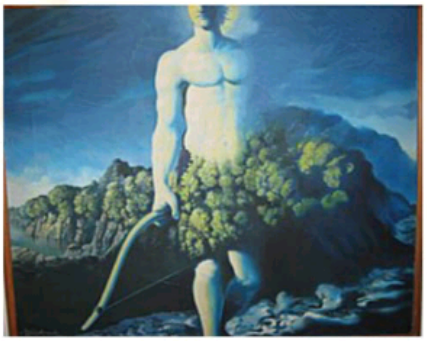

भारत दर्शन

19

भाग-01

लव कुश जन्मस्थली
महर्षि वाल्मीकि आश्रम, बालैनी (बागपत)

1- मान्यता है कि लव-कुश का जन्म बागपत ज़िले के बालैनी गांव में स्थित महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में हुआ था।
2- यह आश्रम हिंडन नदी के किनारे बना है।
3- इस आश्रम का इतिहास रामायण काल से जुड़ा हुआ है।
4- इस आश्रम में लव-कुश की शिक्षा भी हुई थी।
5- माता सीता भी इसी स्थान पर सती हुई थीं। इसलिए इसे माता सीता सती स्थल के नाम से भी जाना जाता है।
6- महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना भी यहीं की थी।
7- इस आश्रम में पंचमुखी महादेव मन्दिर की स्थापना की गई है।
8- इस आश्रम को ब्रहमतुंग नाम से भी जाना जाता था।
9- हर साल आखातीज के दिन यहां लव-कुश का जन्म दिन मनाया जाता है।
10- आश्रम की लोकेशन 👇
यह आश्रम मेरठ-बागपत हाइवे पर स्थित है।
11- बागपत शहर से इसकी दूरी करीब 25 किलोमीटर और मेरठ से भी इतनी ही है।
12- आश्रम की मान्यता 👇
मान्यता है कि जब भगवान राम ने सीता माता का त्याग किया था, तो उन्हें लक्ष्मण यहीं पर छोड़कर गए थे।

जितेन्द्र कुमार, बागपत

भारत दर्शन

20

भाग-02

लव कुश जन्मस्थली

महर्षि वाल्मीकि आश्रम, बालैनी (बागपत)

13- मान्यता है कि इस मंदिर में लव-कुश की जन्मस्थली है तो सीता मैया भी यहां समाई थीं।

14- भगवान राम के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े की लगाम भी यहीं थामी गई थी।

15- मेरठ-बागपत मार्ग पर बालैनी गांव में हिडन किनारे महर्षि वाल्मिक की तपस्थली रही है।

16- महर्षि वाल्मीकि जी ने लव-कुश को यहीं शस्त्र एवं शास्त्र विद्या में पारंगत किया था।

17- यह भी लोक मान्यता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने सीतापुर के नेमी सारण्य स्थान से अश्वमेध यज्ञ के लिए घोड़ा छोड़ा।

18- यह घोड़ा देशभर में चक्कर लगाने के बाद मयराष्ट्र राज्य यानी आज के बागपत में बालैनी स्थित उक्त आश्रम पहुंचा था, जहां लव-कुश ने घोड़ा पकड़ लिया था।

19- घोड़े के साथ चल रही श्री राम की सेना से लव-कुश का युद्ध हुआ।

20- महर्षि वाल्मीकि ने सीता जी की शिव भक्ति देखकर इस आश्रम यानी मंदिर में पंचमुखी नागेश्वर महादेव जी की स्थापना की थी।

21- मान्यता है कि यहां स्थापित शिवलिंग सिद्धपीठ है।

22- इस वाल्मीकि आश्रम में लव-कुश जी का जन्म स्थली, सीता मैया की समाधि स्थल, पंचमुखी महादेव मंदिर, राधा-कृष्ण जी का मंदिर, वैष्णो देवी मंदिर, शनि मंदिर है।

जितेन्द्र कुमार, बागपत

23- विशाल यज्ञशाला है, मंदिर में विराजमान कई प्रतिमाएं हजारों साल पुरानी हैं।

भारत दर्शन

सनासर 21 भाग-01

1 सनासर (Sanasar) भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य के रामबन ज़िले में स्थित एक स्थान है। यह एक प्रसिद्ध पर्वतीय पर्यटन क्षेत्र है। इसका नाम दो स्थानीय ग्रामों के नाम को मिलाकर बना है - सना (Sana) और सर (Sar), जो पटनीटॉप से 20 किमी पश्चिम में स्थित हैं।

2 ये जगह वैष्णो देवी से पास में ही है।

3 इस सुंदर हिल स्टेशन में पैराग्लाइडिंग भी होती है। ऊँचाई से पहाड़ों और हरियाली को देखने का अनुभव ही अलग होता है। वो चंद मिनट आपकी ज़िंदगी के सबसे शानदार पल होते हैं। सनासर वैली में आप पहाड़, हरियाली, झील और नाथाटॉप को देख सकते हैं।

4 यहाँ शंकपाल एवं नाग मन्दिर भी हैं।

5 अगर आपको ट्रेकिंग पसंद है तो आपको सनासर हिल स्टेशन ज़रूर जाना चाहिए। सनासर से आप लाडू लाडी का 4 किमी. लंबा ट्रेक कर सकते हैं। इसके अलावा आप शांता गाला और पंचार वैली का भी ट्रेक कर सकते हैं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

पैराग्लाइडिंग

सनासर 22 भाग-02

सनासर में जलवायु

6 ग्रीष्म ऋतु (अप्रैल से जून)

इस मौसम में मौसम सुहाना रहता है। तापमान 25 डिग्री सेल्सियस से ऊपर नहीं जाता, इसलिए सनासर घूमने का यह सबसे अच्छा समय है।

7 ट्रैकिंग और पैराग्लाइडिंग जैसी कई साहसिक गतिविधियों का आनंद लेने के लिए यह सही समय है। इस मौसम में आप सनासर के आकर्षक घास के मैदानों को खिलते फूलों से सजा हुआ देख सकते हैं।

8 सनासर के घास के मैदान लकड़ी के घेरे पक्षियों को देखने और फोटोग्राफी के अवसर प्रदान करते हैं। साहसिक गतिविधियों में भाग लेने वाले पैराग्लाइडिंग और घुड़सवारी का आनंद ले सकते हैं।

9 पड़ोसी नत्थाटॉप से पीर पंजाल रेंज के मनोरम दृश्य दिखाई देते हैं और यह ट्रैकिंग और कैंपिंग के लिए एक बेहतरीन जगह है।

मानसून ऋतु (जुलाई से अगस्त)

10 जुलाई और अगस्त के महीनों में भूस्खलन के कारण सनासर की सड़क बहुत असुरक्षित हो जाती है, इसलिए मानसून के दौरान इस स्थान की यात्रा करना उचित नहीं है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

शीत ऋतु (सितंबर से मार्च)

11 सितंबर और अक्टूबर के महीनों में मौसम ठंडा और सुहाना रहता है। यह इस जगह पर जाने और इसकी शांत सुंदरता का आनंद लेने के लिए एक आदर्श समय है।

12 अक्टूबर के बाद से, तापमान कम होने लगता है और यहाँ बहुत ठंड हो जाती है। अगर आप बर्फबारी के दौरान इस जगह का जादू देखना चाहते हैं तो आप अक्टूबर के बाद सनासर जा सकते हैं।

शंखपाल मन्दिर

भारत दर्शन

23

शारदा पीठ भाग- 01

1. 237 ईस्वी पूर्व अशोक के साम्राज्य में स्थापित प्राचीन शारदा पीठ करीब 5,000 साल पुराना एक परित्यक्त मंदिर है।

2. शारदापीठ देवी सरस्वती का प्राचीन मन्दिर है जो पाकिस्तान के प्रशासनिक क्षेत्र कब्जाकृत कश्मीर में शारदा के निकट किशनगंगा नदी (नीलम नदी) के किनारे स्थित है।

3. हिंदुओं का मानना है कि यह देवी सती के गिरे हुए दाहिने हाथ के आध्यात्मिक स्थान का प्रतिनिधित्व करता है।

4. शारदा पीठ कश्मीरी पंडितों के लिए तीन सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है।

मृदुला वर्मा, कानपुर देहात

5. 6 वीं और 12 वीं शताब्दी ई. के बीच, यह भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे प्रमुख मंदिर विश्वविद्यालयों में से एक था।

6. यह विशेष रूप से अपने पुस्तकालय के लिए जाना जाता था।

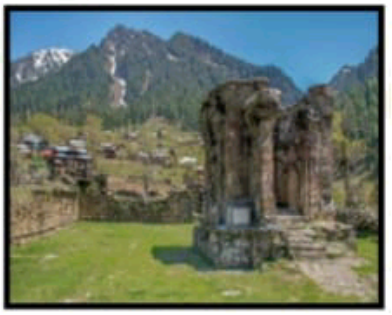

भारत दर्शन

रामनगर 25 भाग-01

1 रामनगर जम्मू और कश्मीर के उधमपुर जिले में स्थित एक ऐतिहासिक छोटा शहर है।
2 रामनगर का नाम इसके अंतिम शासक, रामनगर के राजा राम सिंह के नाम पर रखा गया है।
3 महल के अंदर एक शीश महल या एक प्रकार का हॉल है जहाँ हम आज भी विभिन्न प्रकार की पेंटिंग देख सकते हैं, जिनमें से कुछ रानियों की हैं।
4 रामनगर मुख्यतः पहाड़ी क्षेत्र है। सियोज ग्लेशियर, समना बांज पहाड़ी और गंध टॉप कुछ बहुत ऊँचाई वाले क्षेत्र हैं।

रामनगर किला, उस छोटे मकबरे के पीछे है जो उस स्थान की याद दिलाता है जहां राजा सुचेत सिंह की विधवा ने सती होने का नाटक किया था।

5 रामनगर के मुख्य आकर्षण हैं:
पिंगला माता मंदिर
रामनगर पैलेस
रामनगर किला
चौंतरा माता मंदिर
देवी बानी मनवाल
नरसिंह मंदिर रामनगर
सियोज़ ग्लेशियर और आस-पास के ग्लेशियर
डुडु बसंतगढ़ (पहाड़ी स्टेशन)
राजा राम सिंह ग्लास पैलेस (शीश महल)
अक्षरधाम गुफा

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

शीश महल, रामनगर

पिंगला माता मन्दिर

रामनगर 26 भाग-02

6 रामनगर मनसा देवी नाले पर स्थित है, जो जम्मू से होकर बहने वाली तवी नदी की एक सहायक नदी है। यह उदमपुर-धार-पठानकोट रोड से 27 किमी दूर है।

7 रामनगर शहर कभी बंद्राल्टा राज्य की राजधानी हुआ करता था, जिसके अंतिम राजा, बंद्राल राजपूत राजवंश के भूपेंद्र देव को 1821 में सिख सेना द्वारा हटा दिया गया था और वे आज के हरियाणा राज्य में अंबाला के पास गुमनामी में चले गए थे।

8 रामनगर अपने गोलगप्पों (पानी पुरी), चॉकलेट (बर्फी), सुंड (पंजीरी), पतीसा और अपने विदेशी स्थानीय भोजन - राजमा-चावल (अनार के सूखे बीजों से बनी चटनी के साथ परोसा जाता है) के लिए जाना जाता है, जो रामनगर के व्यंजनों में से एक है।
9 रामनगर की एक और खासियत है कलाड़ी कुलचा। यह एक प्रकार का पनीर है जिसे आम तौर पर रोटी और चाय के साथ खाया जाता है और कलारी पनीर , जो प्रोसेस्ड पनीर की एक किस्म है। जम्मू प्रांत के रामनगर जिले में विशेष रूप से बनाई जाने वाली कलाड़ी को पूरे राज्य में गुणवत्ता के मामले में सबसे बेहतरीन माना जाता है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

10 डोगरा व्यंजनों में अम्बल (कद्दू से बनी मीठी-नमकीन सब्जी), खट्टा मास , कुलथीन दी दाल (डोगरा दाल), दाल पट्ट, मदरा, राजमा , औरिया और कलरी (प्रामाणिक डोगरा पनीर) शामिल हैं। जम्मू के खास अचार कसरोद, गिरगले, सौंफ के साथ आम, जिमीकंद, त्यौ, सेयू और आलू से बनाए जाते हैं। औरिया आलू से बनने वाला व्यंजन है।

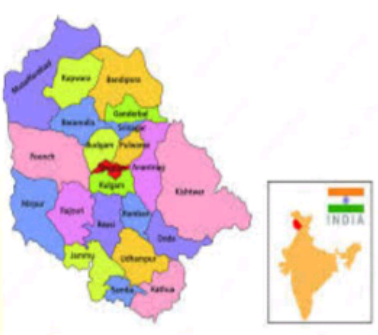

रामनगर की प्रसिद्ध कलाडी

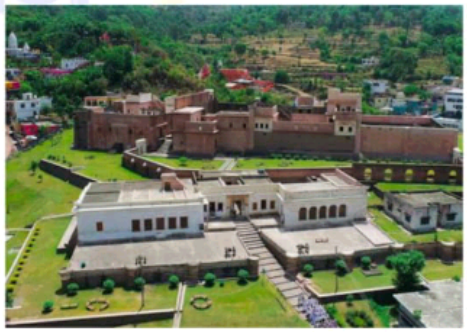

भारत दर्शन

मानसर झील 27 भाग-01

1 मानसर झील जम्मू और कश्मीर के सांबा शहर से लगभग 20 किलोमीटर दूर, सांबा और उधमपुर के बीच बाईपास पर स्थित है।
2 यह शानदार झील देवदार के पेड़ों के जंगल से घिरी हुई है, और अपनी प्राकृतिक सुंदरता और विभिन्न रोमांचक गतिविधियों के लिए पर्यटकों को आकर्षित करती है।
3 यह बड़ी संख्या में तीर्थयात्रियों और भक्तों को आकर्षित करता है, और तिब्बत में पवित्र मानसरोवर झील से जुड़े होने के कारण स्थानीय लोगों द्वारा इसे अत्यधिक महत्व दिया जाता है।
4 झील पर एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण झील के पूर्वी तट पर स्थित शेषनाग, नागों के देवता का मंदिर है।
5 नज़दीक ही दुर्गा और उमापति महादेव मंदिर हैं।
6 दर्शनीय स्थलों की यात्रा और आध्यात्मिकता के अलावा, आप झील पर नाव की सवारी का भी आनंद ले सकते हैं और पानी में इधर-उधर छटपटाती कई मछलियों को देख सकते हैं।
7 मानसर झील भी एक सीमेंटेड पथ से घिरी हुई है, जिसमें प्रोजेक्टेड व्यू डेक हैं, जहाँ से आप मौसमी पक्षियों, बड़ी संख्या में कछुओं और विभिन्न प्रजातियों की मछलियों को देख सकते हैं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

मानसर झील 28 भाग-02

8 जम्मू शहर के पास मानसर झील भारत में सबसे प्रसिद्ध साहसिक पर्यटन स्थलों में से एक है। मानसरोवर को मानसर भी कहा जाता है।

9 मानसर झील राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 1 ए से लगभग 20 किमी दूर है। मानसर झील के लिए सड़क राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 1 ए पर सांबा के पास से शुरू होती है।

10 मानसर का इतिहास महाभारत काल से जुड़ा है। अर्जुन और उल्पी (जो राजा नाग की पुत्री थी) का पुत्र बाबर वाहन महाभारत के प्राचीन काल में इस क्षेत्र का शासक था। युद्ध के बाद, अर्जुन ने "अश्वमेघ यज्ञ" नामक यज्ञ करके इस भूमि पर अपनी श्रेष्ठता और पराक्रम साबित किया।

11 इस से लगभग 9 किमी दूर सुरिनसर झील स्थित है और मानसर-सुरिनसर को कभी-कभी जुड़वा झीलों के रूप से देखा जाता है। इन दोनों के बीच सुरिनसर मानसर वन्य अभयारण्य स्थित है।

12 झील के चारों ओर कई मंदिर हैं, जिनमें उमापति महादेव, नरसिंह और दुर्गा के प्राचीन मंदिर शामिल हैं, जहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

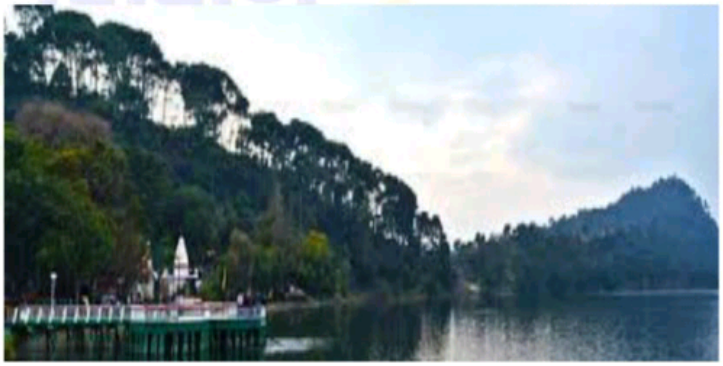

शेषनाग मन्दिर

भारत दर्शन

बंगस घाटी 29 भाग-01

1 पर्यटन की अपार संभावनाओं वाला कश्मीर का एक अपेक्षाकृत अज्ञात क्षेत्र है बंगस घाटी।

2 ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र में स्थित बंगस एक अनूठा पारिस्थितिक संयोजन है जिसमें एक पर्वतीय बायोम शामिल है, जिसमें कम ऊंचाई पर वनस्पतियों के साथ घास के मैदान बायोम और टैगा या शंकुधारी वन शामिल हैं।

3 समुद्र तल से लगभग 10,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित यह घाटी हंदवाड़ा उप जिले के भीतर कुपवाड़ा जिले के उत्तरी भाग में है।

4 लगभग 300 वर्ग किलोमीटर (20x15 किमी) के क्षेत्र को घेरने वाली मुख्य घाटी जिसे स्थानीय रूप से बोध बंगस (बड़ा बंगस) के रूप में जाना जाता है, पूर्व-पश्चिम अक्ष के साथ संरेखित एक रैखिक अण्डाकार कटोरे से बनी है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

5 यह घाटी पूर्व में राजवार और मावर, पश्चिम में शमासबरी और दजलुंगुन पर्वतों और उत्तर में चौकीबल और करनाह गुली से घिरी हुई है दोनों घाटियों में समतल हरे घास के मैदान हैं, जो घने शंकुधारी जंगलों (बुडलू) से ढके निचले पहाड़ों से घिरे हैं और उनके बीच से एक नदी बहती है।

6 मुख्य घाटी के उत्तर-पूर्वी हिस्से में "लोकुट बंगस" (छोटा बंगस) के रूप में जानी जाने वाली एक छोटी घाटी स्थित है। लशर घाटी बौद बंगस के उत्तर की ओर है और बिद्रुन टॉप ट्रेकर्स के लिए पसंदीदा गंतव्य है।

भारत दर्शन

बंगस घाटी 30 भाग-02

7 बिद्रुन टॉप बेहक क्षेत्र से एक किलोमीटर (0.62 मील) लंबी खड़ी चढ़ाई है। इस जगह पर जाने के लिए तीन रास्ते हैं। हंदवाड़ा से रेश्वरी मावर होते हुए सबसे कम दूरी वाला रास्ता । दूसरा रास्ता भी हंदवाड़ा से है , लेकिन राजवार से होकर और यह केवल ट्रैकिंग के लिए उपयुक्त है। तीसरा रास्ता कुपवाड़ा से चौकीबल होते हुए है।
8 घाटी में कई छोटी-छोटी धाराएँ बहती हैं, जिनमें रोशन कुल, तिलवान कुल और डौडा कुल सहित लगभग 14 सहायक नदियाँ शामिल हैं। इन धाराओं का पानी कामिल नदी के मुख्य स्रोतों में से एक है जो आगे चलकर लोलाब धारा से जुड़ती है, जिससे पोहरू नदी बनती है।
9 जानवरों की प्रजातियों में कस्तूरी मृग, मृग, हिम तेंदुआ, भूरा भालू, काला भालू, बंदर और लाल लोमड़ी शामिल हैं।10 घाटी में बड़ी संख्या में निवासी और प्रवासी पक्षी भी भोजन करते और प्रजनन करते हुए पाए जा सकते हैं। प्रमुख निवासी पक्षियों में तीतर, ट्रागोपैन , मोनाल तीतर, काला तीतर, बुश बटेर और जंगली मुर्गे शामिल हैं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

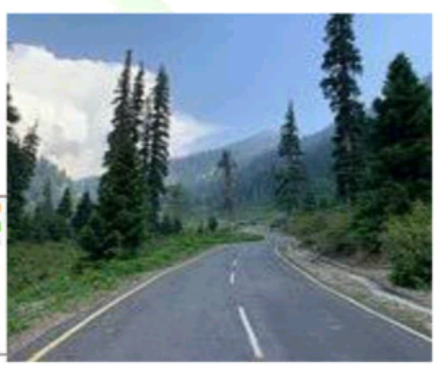

भारत दर्शन

31

भाग-01

दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान

1. राष्ट्रीय उद्यान जम्मू और कश्मीर में श्रीनगर से 22 किलोमीटर दूर स्थित है।
2. 141 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है।
3. इसका नाम शाब्दिक रूप से 'दस गाँवों' के लिए है, जो पार्क बनाने के लिए स्थानांतरित किए गए दस गाँवों की याद में हो सकता है।
4. इसकी स्थापना शुरू में श्रीनगर शहर को स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए की गई थी।
5. 1910 से संरक्षित क्षेत्र, इसे 1981 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था।
6. राष्ट्रीय उद्यान में विभिन्न प्रकार के वन्यजीव पाए जाते हैं।
7. यहाँ 145 से अधिक प्रकार की पक्षी प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें लैमर्जियर, मोनाल तीतर और ब्लू मैगपाई शामिल हैं।

मृदुला वर्मा, कानपुर देहात

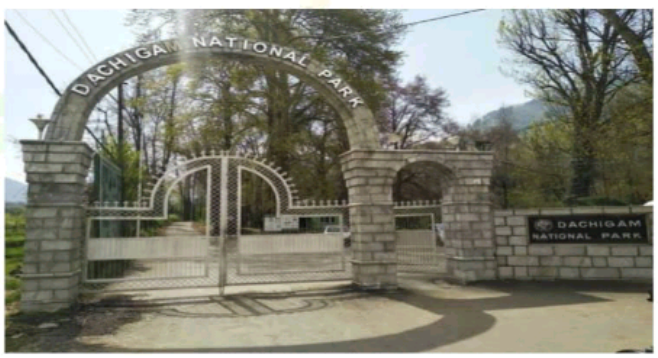

भारत दर्शन

दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान

32

भाग-02

1.यह पार्क अपने विविध वन्यजीव, लुभावने दृश्यों और दुर्लभ हंगुल के लिए प्रसिद्ध है।
2. राष्ट्रीय उद्यान जम्मू और कश्मीर में एक महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध वन्यजीव अभयारण्य है जो अपनी जैव विविधता और लुप्तप्राय हंगुल के लिए जाना जाता है।
3. उद्यान हंगुल या कश्मीरी हिरण के घर के रूप में जाना जाता है।
4. पूरे साल खुला रहता है, लेकिन घूमने का सबसे अच्छा समय अप्रैल से अगस्त के बीच है।
5 एकमात्र ऐसा क्षेत्र जहाँ कश्मीरी हिरण पाया जाता।
6 यह डल झील से पूर्व में, श्रीनगर से 22 किमी दूर 141 वर्ग किमी क्षेत्रफल पर विस्तारित है। इसका मुख्य प्रवेशद्वार श्रीनगर के न्यू थीद क्षेत्र में बस स्टैण्ड के समीप है।
7 यह सन् 1910 में भूतपूर्व जम्मू और कश्मीर रियासत के महाराजा द्वारा एक संरक्षित क्षेत्र घोषित करा गया था, और यहाँ से श्रीनगर के लिए स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करा जाता था। सन् 1981 में इसका दर्जा बढ़ाकर राष्ट्रीय उद्यान कर दिया गया।
8 दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान पश्चिमी हिमालय की ज़बरवान रेंज में स्थित है । ऊँचाई में भिन्नता बहुत ज़्यादा है, जो औसत समुद्र तल से लगभग 1600 मीटर से लेकर 4200 मीटर तक है।
10 पार्क के अंदरूनी हिस्से में ऊंची जगह पर मार्सर झील है, जहाँ से दगवान नदी बहती है। यह सरबंद जलाशय को पानी की आपूर्ति करती है, जो श्रीनगर के लिए पीने के पानी का एक स्रोत है। दगवान अंततः झेलम में बहती है ।

मृदुला वर्मा, कानपुर देहात

भारत दर्शन

भद्रकाली मन्दिर

33

भाग-01

1-भद्रकाली मंदिर, कुपवाड़ा, जम्मू कश्मीर का एक प्रमुख हिन्दू मन्दिर है।

2- उत्तरी कश्मीर के टिक्कर-कुपवाड़ा में स्थित पौराणिक काल के भद्रकाली मंदिर में 36 साल बाद मां भद्रकाली की मूर्ति दोबारा प्रतिष्ठापित की गई है।

3- मार्च २०१८ को प्रथम नवरात्र पर यज्ञ और वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ सनातन परंपरा के अनुरूप मूर्ति को मूल स्थान पर प्रतिष्ठापित किया गया।

4- यह मूर्ति जम्मू में थी। मां भद्रकाली की मूर्ति वर्ष 1981 में रहस्यमय परिस्थितियों में मंदिर से चोरी हो गई थी।

5- दो साल बाद इसे बरामद कर लिया गया।

6- आतंकवाद के दौर में कश्मीरी पंडितों के पलायन के साथ ही मंदिर वीरान हो गया।

7- कश्मीरी पंडितों ने मूर्ति को मंदिर से हटाते हुए पंडित जगन्नाथ के संरक्षण में उनके घर में रखवा दिया था। वर्ष 1999 में मूर्ति को जम्मू ले जाया गया। तब से यह वहीं पर थी।

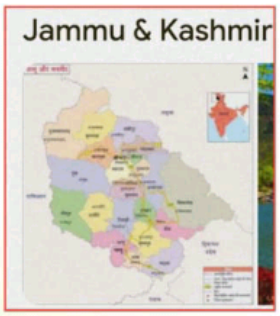

संकलन कर्ता- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

भद्रकाली मन्दिर

34

भाग-02

1 जम्मू और कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के एक मंदिर में माता भद्रकाली की एक प्राचीन मूर्ति को जम्मू से वापस लाए जाने के वर्षों बाद पुनः स्थापित किया गया।

2 हंदवाड़ा के भद्रकाली गाँव में स्थित प्राचीन मंदिर में उत्सव का माहौल था, क्योंकि पीठासीन देवता माँ भद्रकाली की मूल मूर्ति को मार्च 2019 में एक सादे समारोह में उसके मूल निवास में स्थापित किया गया था।

3 मूर्ति को 1981 में चुरा लिया गया था, बाद में बरामद किया गया और 1999 से जम्मू में रखा गया।

4 ऐसा माना जाता है कि हंदवाड़ा से पंडितों के पलायन के दौरान मूर्ति को पंडित जगन्नाथ के घर में छोड़ दिया गया था।

5 निकटतम हवाई अड्डा श्रीनगर में शेख उल-आलम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है जो हंदवाड़ा से 78.8 किलोमीटर दूर स्थित है। हंदवाड़ा अभी तक रेलवे से नहीं जुड़ा है। निकटतम रेलवे स्टेशन बारामुल्ला रेलवे स्टेशन है जो हंदवाड़ा से 30 किलोमीटर दूर स्थित है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

परिहासपुर 35 भाग-01

1 परिहासपोरा या परिहासपुर या पारसपोर या पारसपुर कश्मीर घाटी में श्रीनगर से 22 किलोमीटर (14 मील) उत्तर-पश्चिम में एक छोटा शहर था।

2 8वीं शताब्दी में, कश्मीर क्षेत्र के सबसे महान सम्राट ललितादित्य मुक्तपीड़ ने अपनी राजधानी श्रीनगर से एक नए सुरक्षित स्थान पर स्थानांतरित करने का निर्णय लिया। उन्होंने श्रीनगर से लगभग 22 किमी दूर वितस्ता नदी के ऊपर एक पठार पर कश्मीर की एक नई राजधानी की स्थापना की।

3 उन्होंने इस शहर का नाम परिहासपुर (संस्कृत शब्द जिसका अर्थ है हंसी का शहर या मुस्कुराता हुआ शहर) रखा।

4 परिहासपुर के करेवा बारामुल्ला रोड के पास स्थित हैं। उन्हें राजा ललितादित्य ने एक नई राजधानी के निर्माण के लिए चुना था। पीने के पानी की पर्याप्त आपूर्ति के साथ, परिहासपुर के ऊंचे और सूखे पठार, निर्माण स्थल के रूप में निचले, दलदली श्रीनगर की तुलना में हर तरह से फायदेमंद हैं।

5 ललितादित्य ने 724 से 760 ई. तक कश्मीर पर शासन किया। वह भारतीय उपमहाद्वीप में कश्मीर क्षेत्र का सबसे शक्तिशाली शासक था। उसने परिहासपुर में अपना निवास और चार मंदिर बनवाए। मुक्तकेशव के एक मंदिर में भगवान विष्णु की मूर्ति बनाने के लिए 84,000 तोला सोना इस्तेमाल किया गया था।

6 दूसरे मंदिर में परिहासकेसन की मूर्ति बनाने के लिए उतनी ही मात्रा में चांदी का इस्तेमाल किया गया था। मुख्य मंदिर मार्तंड सूर्य मंदिर से बहुत बड़ा था।

7 उसने तांबे में भगवान बुद्ध की एक मूर्ति भी बनवाई जो आसमान तक ऊँची थी। यह श्रीनगर शहर से भी दिखाई देती थी। इतिहासकारों का दावा है कि परिहासपुर परिसर में भगवान के मंदिर में भगवान बुद्ध का एक अवशेष है।

8 शायद उस समय दो शक्तिशाली धार्मिक विश्वासों के बीच संभावित टकराव से बचने के लिए हिंदू और बौद्ध दोनों मंदिरों के निर्माण की व्यवस्था जानबूझकर की गई थी।

9 ललितादित्य कश्मीर क्षेत्र का इतना शक्तिशाली शासक था कि उसने मध्य भारतीय राजा यशोवर्मन को हराकर कर्नाटक तक अपना क्षेत्र बढ़ा लिया था। उन्हें भारत का सिकंदर भी कहा जाता है। अपने शासनकाल के दौरान उन्होंने कई नए क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की।

10 उनका राज्य दक्षिण भारत में कावेरी नदी के तट तक फैला हुआ था और बंगाल तक उनका नियंत्रण था। लद्दाख और तिब्बत का कुछ हिस्सा उनके नियंत्रण में था। उनके साम्राज्य में भारत के बड़े हिस्से (जैसे पंजाब, हरियाणा, यूपी, आदि) के साथ-साथ वर्तमान अफगानिस्तान और मध्य एशिया के कुछ हिस्से भी शामिल थे।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

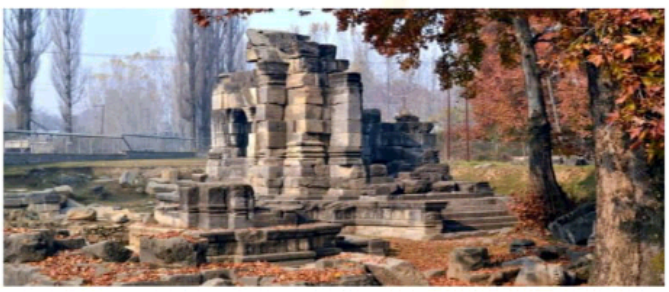

भारत दर्शन

परिहासपुर 36 भाग-02

11 ललितादित्य के काल में अरबों और तिब्बतियों ने भारत पर कई बार हमला किया, लेकिन हर बार उन्होंने खुद ही अपनी सेना का नेतृत्व किया। उन्होंने अपने शासनकाल के दौरान कई लड़ाइयाँ लड़ीं और भारत को अरबों और तिब्बतियों के आक्रमणों से बचाया। लेकिन दुर्भाग्य से इस महान योद्धा को भारत के इतिहासकारों ने नज़रअंदाज़ कर दिया है।

12 ललितादित्य मुक्तापीड़ को कश्मीर का निर्माता कहा जा सकता है। उन्होंने कई मंदिर और तीर्थस्थल बनवाए। इनमें परिहासपुर मंदिर, शारदा पीठ (अब पीओके में), मार्तंड सूर्य मंदिर, कुटिहार मंदिर, वंगथ मंदिर, उश्कुर, लोकभवन, बुनियार मंदिर आदि शामिल हैं। कल्हण ने लिखा है कि ललितादित्य ने हर शहर, गांव, नदी, समुद्र और द्वीप में एक तीर्थस्थल बनवाया।

13 झेलम नदी परिहासपुर के उत्तर-पूर्व में है क्योंकि यह शादीपुर संगम पर सिंध नाले से मिलती है। अतीत में नदियों का यह संगम परिहासपुर के करीब हुआ था। नदी के मार्ग में परिवर्तन प्राकृतिक नहीं है, बल्कि राजा अवंतिवरमन के समय (855-883 ईस्वी) के दौरान प्रसिद्ध इंजीनियर सोया पंडित द्वारा किया गया था।

14 नदी तक पहुंच समाप्त होने से परिहासपुर शहर को बहुत नुकसान हुआ। ललितादित्य की मृत्यु के बाद परिहासपुर ने राजधानी के रूप में अपना दर्जा खो दिया। उनके बेटे कुवलयापीड ने शाही निवास को अपने राजवंश की पारंपरिक राजधानी श्रीनगर में स्थानांतरित कर दिया। वास्तविक विनाश तब हुआ जब अवंतिवरमन के बेटे शंकर उन्होंने शंकरपुर (पट्टन) शहर बनाने के लिए परिहासपुर के पत्थरों को नावों में भरकर ले जाया।

15 हालांकि परिहासपुर लूटपाट से बच गया क्योंकि राजा हर्ष और उक्कल (1089-1101 ई.) के बीच युद्ध के दौरान, उक्कल ने परिहासपुर में शरण ली थी। राजा हर्ष को विश्वास था कि उक्कल एक इमारत में है, इसलिए उसने उस जगह को आग लगा दी। आग ने परिहासपुर की मूर्तियों को तोड़ दिया और पिघला दिया। यही कारण है कि आज पत्थर जले हुए पत्थर जैसे दिखते हैं।

16 मंदिरों को अंतिम झटका तब लगा जब सुल्तान सिकंदर (सिकंदर-ए-बुतशिकन) ने चौदहवीं शताब्दी में उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

17 परिहासपुर अब पत्थरों के विशाल ढेर के साथ खंडहर में है। यही कारण है कि अब इसे 'कनिशहर' (पत्थरों का शहर) कहा जाता है। नींव, चबूतरे, कुरसी और पत्थरों के आकार से कोई कल्पना कर सकता है कि 8वीं शताब्दी ईस्वी में संरचनाएं कितनी विशाल रही होंगी।

18 बैठे और खड़े अटलांटिस की नक्काशीदार आकृतियों के कुछ बेहतरीन उदाहरण एसपीएस संग्रहालय श्रीनगर ले जाए गए हैं। एमएएसटेन ने पहली बार 1892 में इस जगह का दौरा किया था। उनके अनुसार परिहासपुर के पास गुरदन गांव गोवर्धन से आता है। गोवर्धनधरा भगवान विष्णु के नामों में से एक है।

19 यह भी कहा जाता है कि डोगरा शासन के दौरान, कश्मीर के महाराजा परिहासपुर के खंडहरों को सड़क सामग्री के रूप में उपयोग करके झेलम कार्ट रोड का निर्माण कर रहे थे। एमएएसटेन ने उस समय ब्रिटिश सरकार से मदद के लिए संपर्क किया।

20 परिहासपुर की यात्रा करके कश्मीर क्षेत्र के सबसे महान शासक ललितादित्य मुक्तपीड़ की शक्ति का अंदाजा लगाया जा सकता है। लेकिन दुर्भाग्य से वह हमारे इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में एक गुमनाम नायक बनकर रह गया।

21 परिहासपुर अब कश्मीर की भूली हुई राजधानी बन चुका है। यह देखना दुखद है कि इस महान स्थान को भारत के इतिहासकारों ने नज़रअंदाज़ कर दिया है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

गुलमर्ग 37 भाग-01

1- गुलमर्ग (Gulmarg) भारत के जम्मू और कश्मीर में हिल स्टेशन है। इसका मूल नाम गौरीमर्ग (Gaurimarg) / गौरीमठः (संस्कृत भाषा मूल में है), जिसे १६वीं शताब्दी में युसुफ शाह चक ने बदलकर गुलमर्ग कर दिया।

2- इसकी सुंदरता के कारण इसे धरती का स्वर्ग भी कहा जाता है। यह देश के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक हैं। फूलों के प्रदेश के नाम से मशहूर यह स्थान बारामूला ज़िले में स्थित है।

3- यहाँ के हरे भरे ढलान सैलानियों को अपनी ओर खींचते हैं। समुद्र तल से 2730 मी. की ऊँचाई पर बसे गुलमर्ग में सर्दी के मौसम के दौरान यहाँ बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं।

4- आज यह सिर्फ पहाड़ों का शहर नहीं है, बल्कि यहाँ विश्व का सबसे बड़ा गोल्फ कोर्स और देश का प्रमुख स्की रिज़ॉर्ट है।

5- गोंडोला की सवारी गुलमर्ग का शीर्ष आकर्षण है। यह एशिया की सबसे ऊंची केबल कार परियोजना है और दुनिया में सबसे बड़ी और दूसरी सबसे ऊंची है। गोंडोला एक बार में छह लोगों और प्रति घंटे 600 लोगों को ले जा सकता है। केबल कार परियोजना जम्मू और कश्मीर सरकार और फ्रांसीसी फर्म पोमागल्स्की के बीच एक संयुक्त उद्यम है।

6- स्कींग में रुचि रखने वालों के लिए गुलमर्ग देश का ही नहीं बल्कि इसकी गिनती विश्व के सर्वोत्तम स्कींग रिजॉर्ट में की जाती है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

7- इग्लू कैफे और ग्लास इग्लू रेस्टोरेंट

फरवरी 2022 में, गुलमर्ग में दुनिया का सबसे बड़ा इग्लू कैफे खोला गया। इसे 37.5 फीट की ऊंचाई और 44.5 फीट के व्यास के साथ बनाया गया था।वहां एक बार में करीब 40 लोग खाना खा सकते हैं। 2023 में, गुलमर्ग के एक होटल कोलाहोई ग्रीन हाइट्स द्वारा एक ग्लास इग्लू रेस्तरां विकसित किया गया था।

भारत दर्शन

गुलमर्ग 38 भाग-02

8- मोहिनीश्वर शिवालय मन्दिर, महारानी मंदिर (आमतौर पर गुलमर्ग के शिव मंदिर के रूप में जाना जाता है) का निर्माण 1915 में एक हिंदू शासक महाराज हरि सिंह ने अपनी पत्नी महारानी मोहिनी बाई सिसोदिया के लिए किया था।
9- इस मंदिर को डोगरा राजाओं का आलीशान अधिकार माना जाता था। मंदिर शिव और पार्वती को समर्पित है। यह मंदिर हरियाली के साथ एक छोटी सी पहाड़ी पर स्थित है। 10- यह मंदिर गुलमर्ग के सभी कोनों से दिखाई देता है।
11- यह मंदिर एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है और 1974 की हिंदी फिल्म आप की कसम के कुछ लोकप्रिय गीतों जैसे "जय जय शिव शंकर" की शूटिंग यहां की गई थी।
12- खिलनमर्ग गुलमर्ग के आंचल में बसी एक खूबसूरत घाटी है। यहां के हरे मैदानों में जंगली फूलों का सौंदर्य देखते ही बनता है। खिलनमर्ग से बर्फ से ढ़के हिमालय और कश्मीर घाटी का अद्भुत नजारा देखा जा सकता है।
13- अलपाथर झील- चीड़ और देवदार के पेड़ों से घिरी यह झील अफरवात चोटी के नीचे स्थित है। इस खूबसूरत झील का पानी मध्य जून तक बर्फ की बना रहता है।
14- गुलमर्ग से आठ किमी दूर स्थित निंगली नल्लाह एक धारा है जो अफरात चोटी से पिघली बर्फ और अलपाथर झील के पानी से बनी है। यह सफेद धारा घाटी में गिरती है और अंतत: झेलम नदी में मिलती है। घाटी के साथ बहती यह धारा गुलमर्ग का एक प्रसिद्ध पिकनिक स्पॉट है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

39

पहलगाम

भाग- 01

1- पहलगाम एक शीर्ष पर्यटन स्थल है और यह जम्मू और कश्मीर जिले में स्थित है।
2- लिद्दर नदी के तट पर स्थित यह प्रसिद्ध हिल स्टेशन पूरे साल पर्यटकों को आकर्षित करता है।
3- यह समुद्र तल से 7200 फीट की ऊँचाई पर स्थित है।
4- यह स्थान अनंतनाग जिले के मुख्य जिला मुख्यालय से केवल 45 किलोमीटर दूर है
5- लोकप्रिय पर्यटन स्थल और पर्वतीय स्थल है।
6- यह अमरनाथ यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव भी है।
7- पुहेअल" का अर्थ कश्मीर भाषा में "चरवाहा" होता है और "पहलगाम" का अर्थ "चरवाहों का गाम (गाँव)" होता है।
8- यह स्थान मार्ग (घासभूमियों) से घिरा हुआ है।

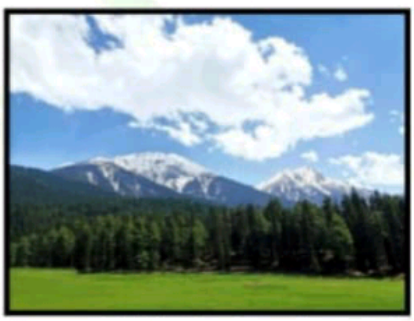

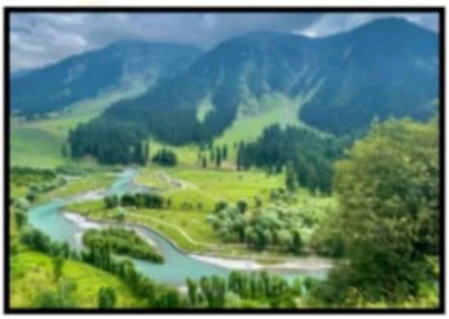

भारत दर्शन

40

पहलगाम

भाग- 02

1- पहलगाम अपने शंकुधारी वनों के लिए प्रसिद्ध हैं।
2- श्रीनगर से 95 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और घने जंगलों, खूबसूरत झीलों और फूलों के घास के मैदानों से घिरा हुआ है।
3- यहाँ से बेताब और अरु घाटियों की यात्रा, घुड़सवारी, कैनोइंग, इत्यादि करे जा सकते हैं।
4- यहाँ घूमने के लिए सबसे अच्छा समय जून से अक्टूबर, दिसंबर और जनवरी है उस समय यहाँ बर्फ पड़ती है।
5- हिमालय के पहाड़, हरे-भरे घास के मैदान, कल-कल करती नदी और सेब के बागों से भरपूर सुन्दर नज़ारे है।
6- पहलगाम प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग जैसा है। यहाँ की सुन्दरता पर्यटकों का मन मोह लेती है।

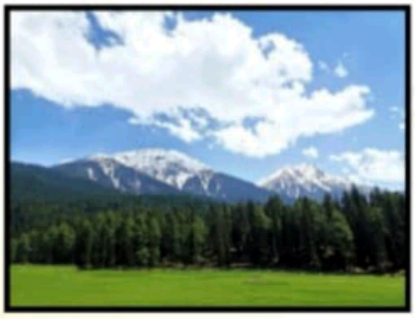

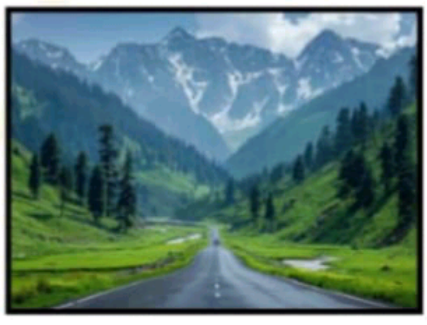

भारत दर्शन

श्रीनगर

41

भाग-01

1- श्रीनगर विभिन्न मंदिरों व मस्जिदों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है।
2- 1700 मीटर ऊंचाई पर बसा श्रीनगर विशेष रूप से झीलों और हाऊसबोट के लिए जाना जाता है। 3- इसके अलावा श्रीनगर परम्परागत कश्मीरी हस्तशिल्प और सूखे मेवों के लिए भी विश्व प्रसिद्ध है।
4- श्रीनगर का इतिहास काफी पुराना है। माना जाता है कि इस जगह की स्थापना सम्राट अशोक मौर्य ने की थी।
5- इस जिले के चारों ओर पांच अन्य जिले स्थित है। श्रीनगर जिला कारगिल के उत्तर, पुलवामा के दक्षिण, बुद्धगम के उत्तर-पश्चिम के बगल में स्थित है।
6- श्रीनगर प्रान्त की ग्रीष्मकालीन राजधानी है।
7- ये शहर और उसके आस-पार के क्षेत्र एक ज़माने में दुनिया के सबसे ख़ूबसूरत पर्यटन स्थल माने जाते थे -- जैसे डल झील, शालिमार और निशात बाग़, गुलमर्ग, पहलगाम, चश्माशाही, आदि।
8-यहाँ हिन्दी सिनेमा की कई फ़िल्मों की शूटिंग हुआ करती थी। श्रीनगर की हज़रतबल मस्जिद में माना जाता है कि वहाँ हजरत मुहम्मद की दाढ़ी का एक बाल रखा है।

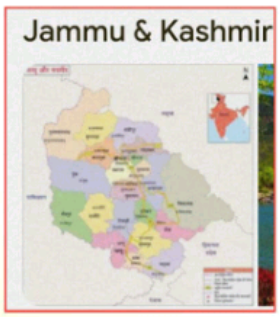

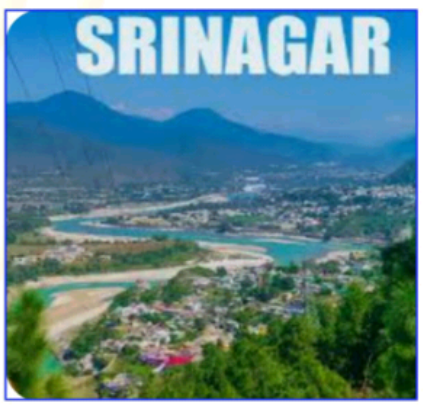

संकलन कर्ता- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

श्रीनगर

42

भाग-02

9- श्रीनगर में ही शंकराचार्य पर्वत है जहाँ विख्यात हिन्दू धर्मसुधारक और अद्वैत वेदान्त के प्रतिपादक आदि शंकराचार्य सर्वज्ञानपीठ के आसन पर विराजमान हुए थे।

10- डल झील और झेलम नदी (संस्कृत : वितस्ता, कश्मीरी : व्यथ) में आने जाने, घूमने और बाज़ार और ख़रीददारी का ज़रिया ख़ास तौर पर शिकारा नाम की नावें हैं।

11- कमल के फूलों से सजी रहने वाली डल झील पर कई ख़ूबसूरत नावों पर तैरते घर भी हैं जिनको हाउसबोट कहा जाता है।

12- इतिहासकार मानते हैं कि श्रीनगर मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बसाया गया था ।

13- श्रीनगर भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य का सबसे बड़ा शहर और ग्रीष्मकालीन राजधानी है।

14- यह कश्मीर घाटी में झेलम नदी के किनारे बसा हुआ है, जो सिन्धु नदी के एक प्रमुख उपनदी है। प्रसिद्ध डल झील और आंचार झील भी नगर-भूगोल का महत्वपूर्ण भाग हैं।

15- कश्मीर घाटी के मध्य में बसा यह नगर भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है।

.

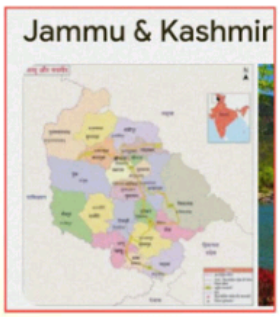

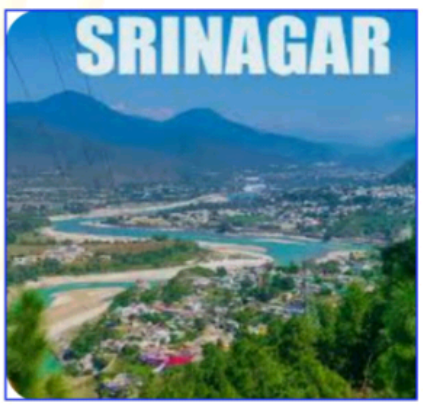

संकलन कर्ता- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

श्रीनगर

43

भाग-03

प्रकृति की सुंदरता है यहाँ बिखरी,
मानो सृष्टि हो यहां सजी-संवरी।
जम्मू-कश्मीर की है राजधानी,
श्रीपुर नाम से जाती है पहचानी।।

गर्मी में भी सर्दी का होता मौसम,
पल-पल में यहाँ बदलता मौसम।
कहीं बर्फ के ऊंचे-ऊंचे पहाड़,
देवदार, चीड़ से ढके पहाड़।।

झील, हाउसबोट की है खूबसूरती,
पर्यटकों को जो आकर्षित करती।
देश-विदेश से आते असंख्य सैलानी,
खूब आनन्द उठाते सारे सैलानी।।

शंकराचार्य मंदिर है श्रीनगर का,
तांता लगा रहता श्रद्धालुओं का।।
पशमीना ऊन है इसकी पहचान,

लाल चौक, ममता चौक बढ़ाते शान।
डल झील सबके मन को भाती,
हाउसबोट, शिकारे सबको लुभाती।।

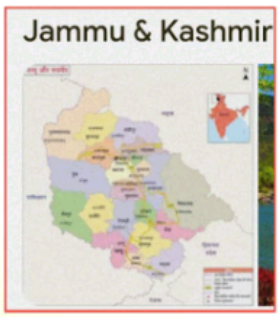

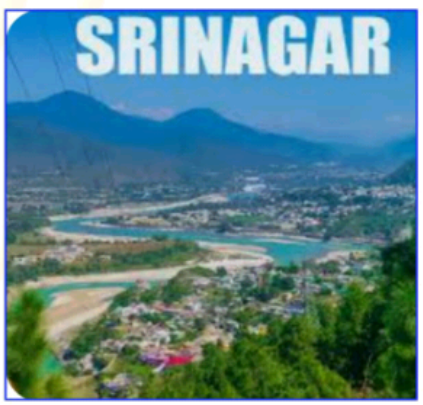

संकलन कर्ता- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

सोनमर्ग 44 भाग-01

1- सोनमर्ग या सोनामर्ग भारत के जम्मू व कश्मीर राज्य के गान्दरबल ज़िले में ३,००० मीटर की ऊँचाई पर स्थित एक पर्वतीय पर्यटक स्थल है।

2- यह सिन्द नाले (सिन्धु नदी से भिन्न) नामक नदी की घाटी में है।

3- सोनमर्ग से आगे ऊँचे पर्वत हैं और कई प्रसिद्ध हिमानियाँ (ग्लेशियर) स्थित हैं।

3- राष्ट्रीय राजमार्ग १ इसे पश्चिम में श्रीनगर और पूर्व में लद्दाख़ से जोड़ता है।

4- सर्दियों में तापमान अक्सर शून्य से नीचे चला जाता है, जिसके कारण भारी बर्फबारी होती है।

5- स्नोशूइंग- सिर्फ स्कीइंग ही नहीं, बल्कि आप सोनमर्ग में स्नोशूइंग का भी अनुभव कर सकते हैं, जो एक अधिक आरामदायक शीतकालीन साहसिक अनुभव है।

6- यह स्थान अमरनाथ गुफा और थजियावास ग्लेशियर जैसे कई लंबी पैदल यात्रा मार्गों के प्रवेश द्वार के रूप में भी कार्य करता है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

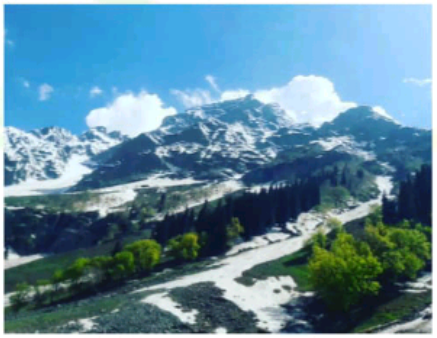

भारत दर्शन

सोनमर्ग 45 भाग-02

7- सोनमर्ग से खरीदने योग्य चीजें:
कश्मीरी गलीचे और कालीन : पारंपरिक पैटर्न और चमकीले रंगों के साथ हस्तनिर्मित कालीन।
पारंपरिक वस्त्र: फिरन, शॉल और अन्य कश्मीरी वस्त्र।
हस्तशिल्प: कढ़ाई की हुई वस्तुएँ, पेपर-मैचे शिल्प और तांबे के बर्तन।
सूखे मेवे: बादाम, अखरोट और क्षेत्र से प्राप्त खुबानी।

8- ज़्यादातर रेस्तराँ भारतीय और कश्मीरी व्यंजन परोसते हैं। कश्मीरी दम आलू, रोगनजोश और यखनी पुलाव ऐसे व्यंजन हैं जिन्हें ज़रूर आज़माना चाहिए। आपको स्थानीय पेय कहवा भी पीना चाहिए, जो ठंड के मौसम में मसालों और बादाम से बनी चाय है।

9- सोनमर्ग में कोई रेलवे स्टेशन नहीं है और निकटतम रेलवे स्टेशन श्रीनगर रेलवे स्टेशन है।

10- सोनमर्ग के आसपास के क्षेत्र में स्थित, विशनसर झील एक किलोमीटर लंबी है।

11- नीलाग्राद नदी सूर्य के नीचे पिकनिक के लिए नदी के किनारे एक आदर्श स्थान है । यह सोनमर्ग से लगभग 6 किमी दूर स्थित है, जो अपने लाल पानी के लिए जाना जाता है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसमें औषधीय गुण होते हैं। लोग हर रविवार को पवित्र स्नान के लिए इस नदी में आते हैं। नदी बाद में सिंधु नदी के साथ विलीन हो जाती है क्योंकि यह नीचे बहती है।

12- ज़ोजी ला दर्रा सोनमर्ग से लगभग 9 किमी दूर स्थित है और कश्मीर और लद्दाख के बीच एक बहुत ही महत्वपूर्ण कड़ी है। ऐतिहासिक रूप से, एक युद्ध में पाकिस्तान द्वारा दर्रे पर कब्जा कर लिया गया था और बाद में भारतीय सेनाओं द्वारा फिर से कब्जा कर लिया गया था।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

सोनमर्ग 46 भाग-03

13- सोनमर्ग, जम्मू और कश्मीर का एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, जिसका इतिहास सिल्क रोड से जुड़ा हुआ है। यह जगह प्राचीन सिल्क रोड पर एक महत्वपूर्ण मार्ग थी जो कश्मीर को चीन और अन्य मध्य एशियाई देशों से जोड़ती थी।

14- सोनमर्ग और उसके आस-पास के क्षेत्र 2000 साल पहले राजा प्रवरसेन द्वितीय के नियंत्रण में थे। उसके बाद श्रीनगर , सोनमर्ग और उसके आस-पास के क्षेत्र मौर्य शासन के अधीन आ गए। इस अवधि के दौरान, बौद्ध धर्म का विकास हुआ। बाद में, कुषाणों ने पहली शताब्दी ईस्वी में इस क्षेत्र पर नियंत्रण कर लिया। बाद में, यह उज्जैन के विक्रमादित्य के नियंत्रण में आया और छठी शताब्दी के दौरान, हूणों ने थोड़े समय के लिए इसे नियंत्रित किया। बाद में, यह कई छोटे राजाओं के शासन में आ गया।

15- 14वीं शताब्दी में, सोनमर्ग और कश्मीर के बड़े हिस्से और आसपास के क्षेत्र मुगल शासन के अधीन हो गए। इतिहास के अनुसार, बादशाह अकबर ने राजा यूसुफ शाह चक को धोखा देकर कश्मीर और आसपास के क्षेत्रों को मुगल साम्राज्य को सौंप दिया था। 18वीं शताब्दी में मुगल काल के पतन के बाद, इस क्षेत्र पर छोटे-छोटे राजाओं का शासन रहा और फिर 19वीं शताब्दी में सिखों के शासन में आया और फिर कुछ दशकों के भीतर यह ब्रिटिशों के अधीन हो गया। सोनमर्ग लंबे समय तक ब्रिटिश शासन के अधीन नहीं रहा क्योंकि इसे कश्मीर की अन्य घाटियों के साथ गुलाब सिंह को दे दिया गया था । गुलाब सिंह और अंग्रेजों के बीच एक संधि के तहत, सोनमर्ग के साथ कश्मीर एक रियासत बन गया और स्वतंत्रता तक गुलाब सिंह के शासन में रहा। 1947 में, सोनमर्ग को भारत में मिला लिया गया।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

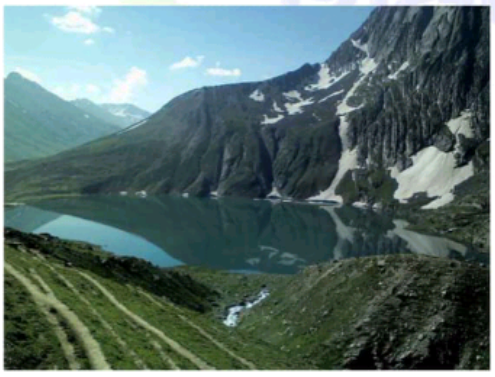

भारत दर्शन

वेरीनाग 47 भाग-01

1- वेरीनाग भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य के अनन्तनाग ज़िले में स्थित एक नगर है। वेरीनाग एक प्रसिद्ध पानी का चश्मा और पर्यटक स्थल है।

2- वेरीनाग का जल झेलम नदी का एक स्रोत है।

3- संस्कृत व कश्मीरी में "नाग" का अर्थ "पानी का चश्मा" होता है और झेलम नदी का मूल संस्कृत नाम "वितस्ता" है, जिसे कश्मीरी में "व्यथ" नदी कहते हैं।

4- झेलम का एक स्रोत होने के कारण "वितस्तत्र" नाम से ही स्थान का नाम उत्पन्न हुआ। वितस्तत्र + नाग समय के साथ परिवर्तित होकर वेरीनाग बन गया। अन्य मान्यता है कि "वेरी" शब्द की जड़ संस्कृत का "विरह" शब्द है जिसका मतलब "वापस जाना" होता है।

5- यह अनंतनाग से लगभग 26 किलोमीटर दूर और श्रीनगर से लगभग 78 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व है जो जम्मू और कश्मीर राज्य की गर्मियों की राजधानी है।

6- जम्मू से श्रीनगर के लिए सड़क यात्रा करते समय, वेरिनाग कश्मीर घाटी का पहला पर्यटन स्थल है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

7- यह जवाहर सुरंग को पार करने के बाद कश्मीर घाटी के प्रवेश बिंदु पर स्थित है और इसे गेटवे ऑफ कश्मीर भी कहा जाता है।

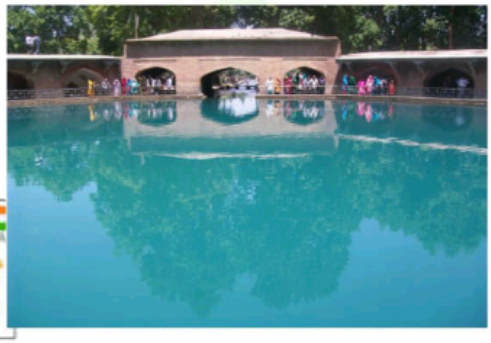

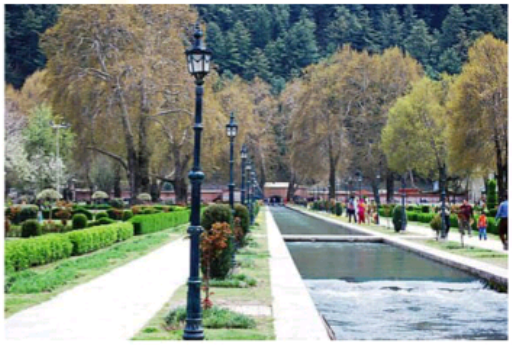

भारत दर्शन

वेरीनाग 48 भाग-02

8- इस जगह का प्रमुख पर्यटक आकर्षण है वेरिनाग स्प्रिंग है, जिसके नाम प्सर स्थान का नाम वेरीनाग है। वेरिनाग स्प्रिंग में एक अष्टकोनी पत्थर बेसिन है और इसके आसपास के एक आर्केड है।

9- वेरिनाग स्प्रिंग और इसके आसपास के मुगल आर्केड आधिकारिक तौर पर भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा राष्ट्रीय महत्व का एक स्मारक के रूप में मान्यता प्राप्त है।

10- वेरीनाग झरना मूल रूप से एक अनियमित और आकारहीन तालाब था और इसमें अलग-अलग जगहों से पानी रिसता था और फैलकर एक छोटा दलदल बन जाता था।

11- एक किंवदंती के अनुसार, देवी वितस्ता (झेलम) इस झरने से उठना चाहती थीं, लेकिन ऐसा हुआ कि जब वह आईं, शिव यहां ठहरे हुए थे, जिसके बाद उन्हें वापस जाना पड़ा और फिर उन्होंने इस स्थान के उत्तर-पश्चिम में लगभग एक मील की दूरी पर स्थित विठवतुर (वितस्तात्र) से अपनी उत्पत्ति ली। संस्कृत में विरह का अर्थ है 'वापस जाना' और 'नाग' का अर्थ है पानी का झरना और, क्योंकि वितस्ता को इस स्थान से वापस जाना पड़ा, इसे विरहनाग या "वेरनाग" कहा जाने लगा।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

12- नीलमत पुराण कहा जाता है कि इस झरने के पास भगवान विष्णु ने पहली बार हल की नोक रखी थी जिससे सतीसारा को बहाया गया था और यहीं पर भगवान शिव के त्रिशूल के प्रहार से देवी पार्वती को वितस्ता नदी के रूप में पाताल से प्रकाश में लाया गया था।

भारत दर्शन

गुरेज़ 49 भाग-01

1- गुरेज़ (Gurez) या गुरेइस (Gurais), जिसे स्थानीय शीना भाषा में गोराई (Gurá ai) कहते हैं, भारत के जम्मू और कश्मीर प्रदेश के बांडीपूर ज़िले में स्थित एक शहर है।

2- लगभग ८,००० फ़ुट की ऊँचाई पर बसा यह शहर बर्फ़-ढकी पहाड़ियों से घिरा हुआ है।

3- यह उत्तरी कश्मीर का भाग है और यहाँ बसने वाले लोग कश्मीरी भाषा बोलने की बजाय शीना भाषा बोलते हैं जो कश्मीरी की तरह एक अन्य दार्दी भाषा है।

4- यहाँ बसने वाले नियंत्रण रेखा के पार गिलगित-बल्तिस्तान क्षेत्र के अस्तोर ज़िले में बसने वाले लोगों से मिलते-जुलते हैं।

3- सर्दियों में यहाँ भारी बर्फ़बारी होने से यातायात काफ़ी हद तक ठप्प रहता है।

4- श्रीनगर को गिलगित से जोड़ने वाला ऐतिहसिक मार्ग यहीं से निकलकर उत्तर में बुरज़िल दर्रे से होता हुआ जाता है।

5- कुछ इतिहासकार मानते हैं कि शायद गुरेज़ वही बस्ती है जिसका ज़िक्र प्रसिद्ध कश्मीरी इतिहासकार कल्हण ने अपनी राजतरंगिणी में 'दरतपुर' यानि 'दर्द (जाति के) लोगों का शहर' के नाम से किया था।

6- गुरेज़ पहाड़ों से घिरा हुआ है इसलिये सम्भव है कि इसी को 'गिरिगुप्त' कहा गया हो।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

गुरेज़ 50 भाग-02

7- दरदों की प्राचीन राजधानी, डावर, गुरेज़ घाटी में स्थित है और एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है।
8- घाटी में महत्वपूर्ण अन्य पुरातात्विक स्थलों में कंजलवान शामिल है, जहां माना जाता है कि बौद्ध धर्म की अंतिम परिषद आयोजित की गई थी और आगे की ओर, प्राचीन शारदा विश्वविद्यालय के खंडहर किशनगंगा / नीलम नदी के किनारे संरक्षित हैं।
9- पारंपरिक लकड़ी के घर गुरेज को किसी यूरोपीय देश से कम नहीं बनाते हैं।
10- गुरेज और तुलैल से ट्रैकिंग रूट पूर्व में गंगाबल और सोनमर्ग और उत्तर में द्रास, दहानू और ज़ांस्कर तक जाते हैं। 11- गुरेज में किशन गंगा नदी राफ्टिंग के लिए आसान धारा और तुलैल से कठिन धाराएं प्रदान करती है। कुछ पहाड़ों में रॉक क्लाइम्बिंग के लिए बिल्कुल चुनौतीपूर्ण गुंजाइश है। 12- ट्राउट मछली पकड़ना स्थानीय लोगों के बीच एक लगातार खेल है, जो दिन के लिए अच्छा भोजन प्राप्त करने के लिए एक लाइन में मछली पकड़ते हैं।
13 गुरेज में सुंदर कैंपसाइट हैं जहां नदी के पास टेंट लगाए जा सकते हैं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

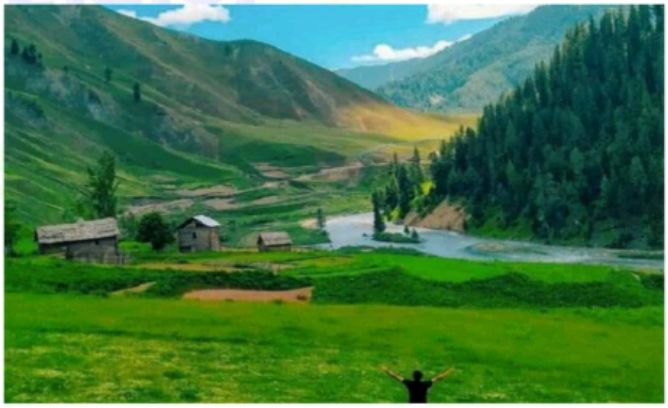

भारत दर्शन

भद्रवाह 51 भाग-01

1- भद्रवाह भारत के जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश के डोडा ज़िले में स्थित एक नगर है। यह ज़िले में तहसील का दर्जा भी रखता है।
2- भद्रवाह घाटी अपनी खूबसूरती और प्रकृति के लिए मशहूर है। भद्रवाह घाटी को 'सांपों की भूमि' के नाम से जाना जाता है।
3- भद्रवाह मेला पाट, सुबर धार मेला, कुड नृत्य, पहाड़ी लोकगीत और संगीत जैसे मेलों और त्यौहारों की भूमि भी है। 4- यहाँ किला, सौ साल पुरानी मस्जिद और प्राचीन वासुकी नाग मंदिर जैसी विरासत स्थल भी हैं।
5- भद्रवाह नाम संस्कृत शब्द भद्रवासा से निकला है जिसका अर्थ है "सर्वोच्च और बुद्धिमान मानव जाति के रहने का स्थान"।
6- वैकल्पिक रूप से, यह नाम भद्रकाशी से लिया जा सकता है , जो इस क्षेत्र में स्थित हिंदू देवी भद्रकाली के प्राचीन मंदिर के लिए शहर को दिया गया नाम है।
7- इस क्षेत्र को भद्र अवकाश (शाब्दिक रूप से ' एक अच्छा विश्राम स्थल ') और 12वीं शताब्दी के संस्कृत इतिहास राजतरंगिणी में भद्र पुरा कहा जाता है , जिसमें पूर्व में विदेशी कश्मीरी शासकों द्वारा इस क्षेत्र को दिया गया नाम शामिल है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

8- कश्मीर घाटी के साथ स्थलाकृतिक समानता के कारण क्षेत्र को कभी-कभी छोटा कश्मीर या "छोटा कश्मीर" कहा जाता है, और क्षेत्र के हिंदुओं द्वारा इसे भद्रकाशी कहा जाता है।

भारत दर्शन

भद्रवाह 52 भाग-02

9- भद्रवाह पर 8वीं शताब्दी ईस्वी तक अपने मूल शासकों का शासन था। 10वीं-11वीं शताब्दी के दौरान, यह पड़ोसी कश्मीर के अनंत और कलशा के शासन में आया।
10- इस क्षेत्र का उल्लेख 12वीं शताब्दी के इतिहास, राजतरंगिणी में मिलता है।
11- पाल वंश के स्थानीय पहाड़ी सरदारों या राणाओं (मूल रूप से बिलावर रियासत के चंदरबांसी बलोरिया राजपूत) ने 8वीं-16वीं शताब्दी के दौरान इस क्षेत्र पर शासन किया।
12- पाल शासकों की वंशावली राजा राधिक पाल, (बालोर के राजा भोगपाल के पुत्र और साधकपाल के भाई, जिन्हें बसोहली की रियासत दी गई थी) से शुरू हुई, उसके बाद उनके बेटे भद्र पाल।
13- 16वीं शताब्दी के अंत में इसे चंबा के शासकों ने अपने कब्जे में ले लिया , जिन्होंने पाल राजाओं पर प्रभाव डाला । 14- 1820 में पाल वंश के अंतिम शासक राजा पहाड़चंद के चचेरे भाई गद्दी पर बैठे और वजीर नाथू के नेतृत्व वाली चंबा सेना के खिलाफ लड़े। राजा पहाड़चंद ने लड़ाई जीत ली लेकिन वजीर नाथू ने सिखों की मदद से भद्रवाह पर फिर से हमला किया और भद्रवाह पर कब्जा कर लिया। चंबा के राजा ने भद्रवाह की गद्दी अपने छोटे भाई पराक्रम सिंह को दे दी। पराक्रम सिंह की मृत्यु के बाद राजा जोरावर सिंह को भद्रवाह का राज्यपाल बनाया गया ।
14- अमृतसर की संधि के बाद यह क्षेत्र जम्मू और कश्मीर के डोगरा साम्राज्य का हिस्सा बन गया।
15- यहाँ रतनगढ़ किला, सौ साल पुरानी जामिया मस्जिद और प्राचीन वासुकी नाग मंदिर जैसी विरासत स्थल भी हैं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

दूधपथरी 53 भाग-01

1- दूधपथरी, जिसका अर्थ है "दूध की घाटी", जम्मू और कश्मीर के बडगाम जिले में स्थित एक मनमोहक हिल स्टेशन और पर्यटन स्थल है।

2- समुद्र तल से 8,957 फीट की प्रभावशाली ऊंचाई पर स्थित, दूधपथरी एक शांत और मनोरम स्थल है, जो श्रीनगर से सिर्फ 42 किलोमीटर और बडगाम के जिला मुख्यालय से 22 किलोमीटर दूर है।

3- घास के मैदानों से बहने वाला पानी दूर से दूधिया दिखाई देता है और पूरे साल बहुत ठंडा रहता है।

4- दूधपथरी हिमालय की पीर पंजाल रेंज में एक कटोरे के आकार की घाटी में स्थित है , जो समुद्र तल से 2,730 मीटर (8,960 फीट) की ऊँचाई पर है।

5- यह एक अल्पाइन घाटी है जो बर्फ से ढके पहाड़ों और चीड़ , देवदार और देवदार के घास के मैदानों से ढकी हुई है।

6- प्राकृतिक घास के मैदान, जो सर्दियों में बर्फ से ढके रहते हैं, वसंत और गर्मियों के दौरान डेज़ी, फॉरगेट-मी-नॉट्स और बटरकप जैसे जंगली फूलों को उगने देते हैं ।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

दूधपथरी 54 भाग-02

7- श्रीनगर से दूधपथरी तक कार या टैक्सी से 2 घंटे से भी कम समय में आसानी से पहुंचा जा सकता है। दूधपथरी के लिए मार्ग श्रीनगर से बडगाम, बडगाम से खानसाहिब और खानसाहिब से राययार होते हुए दूधपथरी तक हैं, जिनकी कुल दूरी लगभग 45 किमी (28 मील) है।

8- दूसरा मार्ग श्रीनगर से गुलमर्ग रोड तक है; यह मार्ग श्रीनगर से मगाम , मगाम से बीरवाह और बीरवाह से जैनगाम और अरिजाल होते हुए दूधपथरी तक जाता है , जिसकी कुल दूरी लगभग 50 किमी (31 मील)।

9- दूधपथरी के मुख्य आकर्षण तंगनार, मुजपाथर, दोफखाल, सोचिलपाथर, पामैदान और परिहास हैं।

10- तंगनार नदी : (शाब्दिक अर्थ: नाशपाती की घाटी) यह स्थान दूधपथरी से 2 किमी (1.2 मील) पहले रास्ते में आता है। यह छोटी घाटियों का एक खूबसूरत स्थान है जहाँ छोटी पहाड़ियों पर देवदार और चीड़ के पेड़ हैं।

11 -मुजपथरी (अनुवाद: शलजम की घाटी) दूधपथरी से 3 किमी (1.9 मील) दूर एक छोटा सा गांव है, यह शालिगंगा नदी के तट पर स्थित है।

12- पलमैदानपृथ्वी : पलमैदान (अनुवाद: बड़े पत्थरों वाला मैदान) का नाम "बड़े पत्थरों" के नाम पर रखा गया है क्योंकि मैदान के चारों ओर बड़े-बड़े पत्थर हैं। यह दूधपथरी से लगभग 5 किमी (3.1 मील) की दूरी पर स्थित है और चरवाहों और चरवाहों का पसंदीदा स्थान है जहाँ वे गर्मियों में बड़ी संख्या में इकट्ठा होते हैं और अपने मवेशियों और पशुओं को चराते हैं।

13- दिक्षाल : दिक्षाल पहाड़ की चोटी पर एक सुंदर घास का मैदान है और अष्टार ग्लेशियर को देखता है। यह दूधपथरी में शालिगंगा नाले से लगभग 10 किमी (6.2 मील) की दूरी पर है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

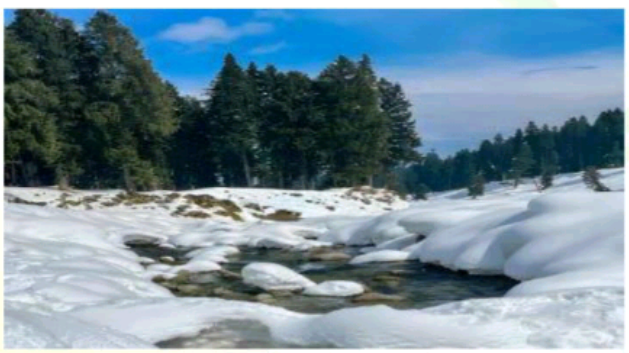

भारत दर्शन

55

लाल द्रमन

भाग- 01

1- लाल द्रमन भारतीय केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर में एक हिल स्टेशन है ।
2- यह साज़ान गाँव के पास डोडा शहर से 25 किलोमीटर उत्तर की ओर स्थित है।
3- यह ऊँचे देवदार और देवदार के पेड़ों से आच्छादित है।
4- लाल द्रमन में हर साल एक ग्रामीण-सह-पर्यटन मेला आयोजित किया जाता है।
5- डोडा जिले के सांस्कृतिक यहाँ मेले का आनन्द लेने के लिए हजारों पर्यटक वहाँ आते हैं।
6- लाल द्रमन सहित ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों का निर्माण शुरू हुआ।

मृदुला वर्मा, कानपुर देहात

भारत दर्शन

लाल द्रमन 56 भाग- 02

1- लाल द्रमन डोडा जिले में एक पर्यटक आकर्षण के रूप में जाना जाता है, मौसमी स्थानीय और विदेशी पर्यटक वहाँ आते हैं।

2- सर्दियों में आमतौर पर 6-7 फीट बर्फबारी होती है, जिसके कारण पर्यटक स्कीइंग जैसे शीतकालीन खेलों के लिए वहां जाते हैं ।

3- इसके खूबसूरत परिदृश्य, सुन्दर पिकनिक स्थल और सांस्कृतिक उत्सव पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण हैं।

4- डोडा जिले की संस्कृति को दर्शाते हुए हर साल गर्मियों में एक दिवसीय ग्रामीण-सह-पर्यटन मेला आयोजित किया जाता है।

मृदुला वर्मा, कानपुर देहात

5- मेले मे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाते हैं।

6- लाल द्रमन में एक दूसरे के बगल में बनी छोटी मस्जिद और मन्दिर को मुसलमानों और हिन्दुओं के बीच एकता का प्रतीक कहा जाता है ।

भारत दर्शन

परी महल 57 भाग-01

1- परी महल (शाब्दिक अर्थ ' परियों का महल ') ज़बरवान पर्वत श्रृंखला की चोटी पर बना एक शानदार सात-सीढ़ीदार मुगल उद्यान है। यह श्रीनगर शहर और भारतीय केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर में डल झील के दक्षिण-पश्चिम को देखता है।

2- यह उद्यान तत्कालीन मुगल सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान इस्लामी वास्तुकला और कला के संरक्षण का एक बेहतरीन उदाहरण है , जिसमें मेहराबदार द्वार, सीढ़ीदार उद्यान और जटिल जल चैनल हैं।

3- परी महल का निर्माण मुगल सम्राट शाहजहाँ के सबसे बड़े बेटे दारा शिकोह ने 1600 के दशक के मध्य में करवाया था । 4- इसका निर्माण एक पुराने बौद्ध मठ के खंडहरों पर किया गया था। यह एक पुस्तकालय और ज्योतिष और खगोल विज्ञान जैसे विषयों के लिए एक शिक्षण केंद्र के रूप में भी कार्य करता था ।

5- ऐसा माना जाता है कि दारा शिकोह वर्ष 1640, 1645 और 1654 में यहाँ रहा था। बाद में, यह उद्यान जम्मू और कश्मीर सरकार के स्वामित्व में आ गया ।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

परी महल 58 भाग-02

6- समय के साथ, परी महल का उपयोग एक शीर्ष-गुप्त पूछताछ केंद्र और उच्च-स्तरीय नौकरशाहों के लिए आधार के रूप में भी किया गया है।

7- यह महल ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। अपने प्राचीन स्मारकों के लिए यह मशहूर है।

8- दारा शिकोह ने अपने सूफ़ी शिक्षक मुल्ला शाह बदाख़्शी के सम्मान में यहां एक बौद्ध मठ का भी निर्माण करवाया था, जिसे बाद में ज्योतिष विज्ञान के विद्यालय में बदल दिया गया।

9- ऐसी मान्यता है कि पौराणिक समय में यहां झरने हुआ करते थे, जो अब सूख चुके हैं।

10- पहले परी महल, खगोल विज्ञान और ज्योतिष सीखने का एक केंद्र था।

11- इस बाग़ की कुल लंबाई और चौड़ाई क्रमश: 122 मीटर और 62.5 मीटर है। बाग़ में 6 छत हैं। अन्य गार्डन की तरह परी महल में पानी का साधन नहीं है।

12- यहां पानी के लिए छतों पर टंकी रखी हुई हैं, जिन्हे अंडरग्राउंड वॉटर से भरा जाता है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

अमरनाथ गुफा 59 भाग-01

1- अमरनाथ गुफा जम्मू और कश्मीर के अनंतनाग जिले में स्थित है।
2- यह पहलगाम के पास स्थित है और समुद्र तल से लगभग 12,756 फीट की ऊंचाई पर है।
3-यह हिंदुओं के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है, जहाँ हर साल हजारों श्रद्धालु बर्फ के शिवलिंग के दर्शन के लिए आते हैं।
4- अमरनाथ गुफा की स्थिति:
राज्य: जम्मू और कश्मीर
जिला: अनंतनाग
स्थान: पहलगाम के पास
ऊँचाई: लगभग 12,756 फीट (3,888 मीटर)
दूरी: श्रीनगर से लगभग 140 किलोमीटर
5- अमरनाथ यात्रा:
अमरनाथ गुफा हिंदुओं के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है, जहां हर साल अमरनाथ यात्रा होती है।
6- यह यात्रा गर्मियों के कुछ महीनों के लिए खुली रहती है और तीर्थयात्री पहलगाम या बालटाल से गुफा तक ट्रेकिंग करके पहुंचते हैं।
7- अमरनाथ गुफा के दर्शन:
गुफा में बर्फ से प्राकृतिक शिवलिंग का निर्माण होता है।
8- यह शिवलिंग हिंदू धर्म में भगवान शिव का प्रतीक है।

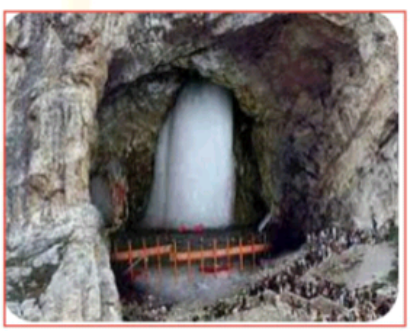

संकलन कर्ता- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

अमरनाथ गुफा 60 भाग- 02

9- हर साल हजारों श्रद्धालु अमरनाथ गुफा में शिवलिंग के दर्शन के लिए आते हैं।

10- अमरनाथ गुफा एक पवित्र गुफा है, जो भगवान शिव को समर्पित है।

12- यह गुफा हिमालय के ऊपर स्थित है और इसे हिंदू धर्म के सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक माना जाता है।

13- अमरनाथ गुफा का इतिहास:

पौराणिक मान्यता:

अमरनाथ गुफा को हिंदुओं के पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक माना जाता है। मान्यता है कि भगवान शिव ने यहां माता पार्वती को अमरत्व का रहस्य बताया था।

14- प्राकृतिक शिवलिंग:

गुफा में बर्फ से प्राकृतिक शिवलिंग बनता है, जो चंद्रमा के चरणों के अनुसार बढ़ता और घटता है। यह शिवलिंग दुनिया का एकमात्र ऐसा शिवलिंग है जो प्राकृतिक रूप से बनता है। अमरनाथ गुफा में भगवान शिव ने माता पार्वती को अमरकथा सुनाई थी, जिससे शुक ऋषि को अमरत्व प्राप्त हुआ था।

15- अमर कबूतर:

गुफा में एक कबूतर का जोड़ा भी देखा जाता है, जो अमर माना जाता है।

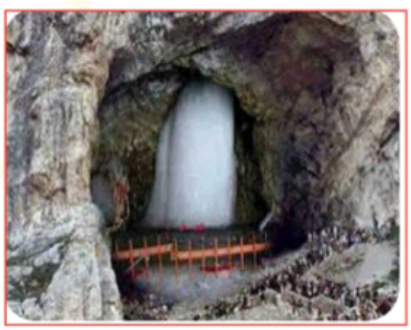

संकलन कर्ता- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

मार्तण्ड सूर्य मन्दिर

61

भाग-01

1- मार्तंड सूर्य मंदिर भारत के जम्मू और कश्मीर प्रदेश के अनंतनाग ज़िले के में स्थित 8वीं शताब्दी में सूर्यवंशी क्षत्रिय करकोट वंश ललितादित्य मुक्तपीड के राजकाल में बना एक हिन्दू मन्दिर है।

2- मार्तंड मंदिर एक पठार के ऊपर बनाया गया था जहाँ से पूरी कश्मीर घाटी को देखा जा सकता है। खंडहरों और संबंधित पुरातात्विक निष्कर्षों से, यह कहा जा सकता है कि यह कश्मीरी वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना था, जिसने गंधारन, गुप्त और चीनी वास्तुकला के रूपों को मिश्रित किया था।

3- मंदिर में एक उपनिवेशित प्रांगण है, जिसका प्राथमिक मंदिर इसके केंद्र में है और यह 84 छोटे मंदिरों से घिरा हुआ है, जो 220 फीट लंबा और कुल 142 फीट चौड़ा है और इसमें एक छोटा मंदिर शामिल है जो पहले बनाया गया था।

4- मंदिर कश्मीर में एक पेरिस्टाइल का सबसे बड़ा उदाहरण बन गया है, और इसके विभिन्न कक्षों के कारण जटिल है जो आकार में आनुपातिक हैं और मंदिर की समग्र परिधि के साथ संरेखित हैं।

5- हिंदू मंदिर वास्तुकला के अनुसार, मंदिर का प्राथमिक प्रवेश द्वार चतुर्भुज के पश्चिमी भाग में स्थित है और मंदिर के समान ही चौड़ाई है, जो भव्यता पैदा करता है। प्रवेश द्वार पूरी तरह से मंदिर का अत्यधिक प्रतिबिंबित है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

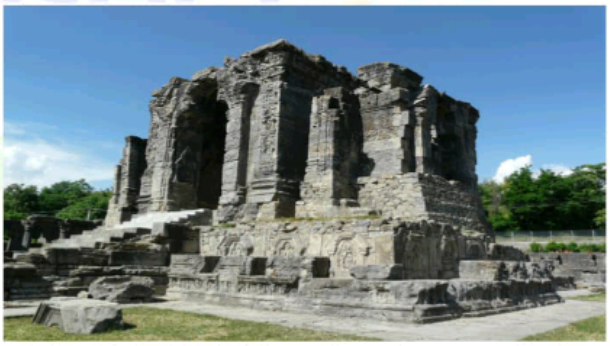

भारत दर्शन

मार्तण्ड सूर्य मन्दिर

62

भाग-02

6- यह सूर्य देवता के मार्तंड रूप को समर्पित है। इसे 15वीं शताब्दी में उस समय कश्मीर घाटी पर सत्ता करे हुए सिकंदर शाह मीरी द्वारा भारी क्षति पहुँचाई गई और इस समय यह खण्डरावस्था में है।

7- 15 वीं शताब्दी की शुरुआत में सिकंदर बुतशिखान के शासन के दौरान मार्तंड सूर्य मंदिर को नष्ट कर दिया गया था, जो हिंदुओं के इस्लाम में जबरन धर्मांतरण के लिए जिम्मेदार था। उसे 'सिकंदर द इकोनोक्लास्ट' या सिकंदर बुतशिकन भी कहा जाता था। वह कश्मीर के शाह मिरी राजवंश के छठे सुल्तान थे। उसने 1389 से 1413 के बीच शासन किया। सिकंदर बुतशिकन धार्मिक कट्टर था।

8- यह एक भव्य मंदिर था और ऐसा कहा जाता है कि मार्तंड सूर्य मंदिर को नुकसान पहुंचाने के लिए उन्हें एक समर्पित टीम और एक वर्ष का समय लगा। कई इतिहासकार इस सिद्धांत को मानते हैं।

9- जम्मू और कश्मीर के उपराज्यपाल ने भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के तहत संरक्षित स्मारक, 8 वीं शताब्दी के मार्तंड सूर्य मंदिर के खंडहर में आयोजित एक धार्मिक समारोह में भाग लिया। इस मंदिर को "राष्ट्रीय महत्त्व के स्थलों " के रूप में मान्यता दी गई है।

10- मार्तंड सूर्य मंदिर जिसे पांडौ लैदान के नाम से भी जाना जाता है, एक हिंदू मंदिर है जो सूर्य (हिंदू धर्म में प्रमुख सौर देवता) को समर्पित है और 8वीं शताब्दी ईसवी के दौरान बनाया गया था। मार्तंड का एक और संस्कृत पर्याय सूर्य है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

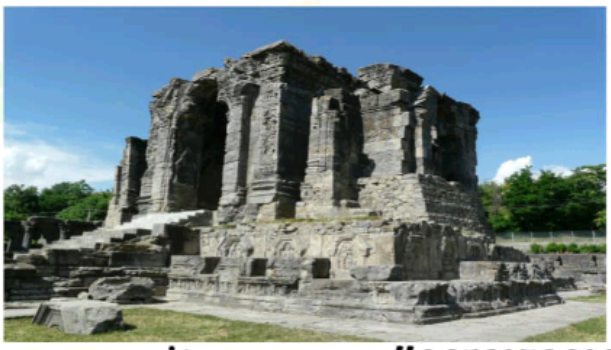

भारत दर्शन

63

हरि पर्वत

भाग- 01

1- हरि पर्वत, जिसे कोह-ए-मरन भी कहा जाता है।
2- श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर में डल झील के पश्चिम में स्थित एक छोटी पहाड़ी है।
3- इस पहाड़ी के शीर्ष पर हरि पर्वत किला बना हुआ है, जो मुगलकालीन इतिहास को दर्शाता है।
4- पहाड़ी के शीर्ष पर हरि पर्वत किला स्थित है, जो एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थल है।
5- पहाड़ी पर एक मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारा भी है, जो विभिन्न धर्मों के लोगों को एक साथ लाता है।
6- इस किले का निर्माण 18वीं शताब्दी में अत्ता मोहम्मद खान द्वारा करवाया गया था, जो कश्मीर के एक अफ़गान गवर्नर थे।

मृदुला वर्मा, कानपुर देहात

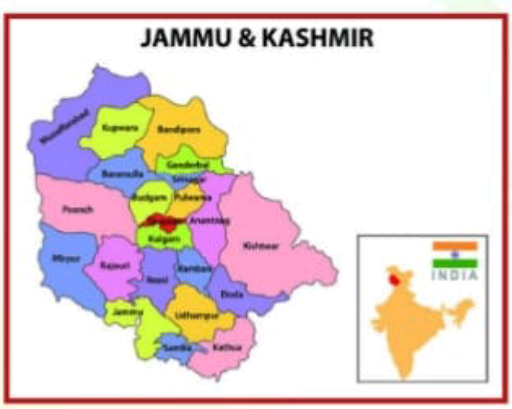

भारत दर्शन

हरि पर्वत 64 भाग- 02

1- यह दुर्रानी साम्राज्य द्वारा निर्मित हरि पर्वत किले और एक हिन्दू मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारे का स्थल है।
2- भारत सरकार ने 15 अगस्त 2021 (75वें स्वतन्त्रता दिवस) पर किले की चोटी पर 100 फीट ऊँचा भारतीय ध्वज फहराया।
3- हरि पर्वत को कंकड़ के रूप में पूजा जाता है, और पार्वती की पूजा शारिका नाम से की जाती है।
4- इसका मन्दिर पहाड़ी की पश्चिमी ढलान के मध्य भाग में स्थित है।
4- हरि पर्वत की ऐतिहासिकता इसे एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल बनाती है।
5- हरि पर्वत किले में प्रवेश के लिए पुरातत्व विभाग से अनुमति लेनी होती है।

मृदुला वर्मा, कानपुर देहात

भारत दर्शन

डल झील 65 भाग-01

1- डल झील श्रीनगर, कश्मीर की एक प्रसिद्ध झील है। १८ किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई यह झील तीन दिशाओं से पहाड़ियों से घिरी हुई है। 2- यह जम्मू-कश्मीर की दूसरी सबसे बड़ी झील है। इसमें सोतों से तो जल आता है साथ ही कश्मीर घाटी की अनेक झीलें आकर इसमें मिलती हैं।

3- इसके चार प्रमुख जलाशय हैं- गगरीबल, लोकुट डल, बोड डल तथा नागिन। लोकुट डल के मध्य में रूपलंक द्वीप स्थित है तथा बोड डल जलधारा के मध्य में सोनालंक द्वीप स्थित है।

4- भारत की सबसे सुंदर झीलों में इसका नाम लिया जाता है। पास ही स्थित मुगल वाटिका से डल झील का सौंदर्य अप्रतिम नज़र आता है।

संकलन कर्ता- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

डल झील 66 भाग-02

5- डल झील के मुख्य आकर्षण का केन्द्र है यहाँ के शिकारे या हाउसबोट।
6- सैलानी इन हाउसबोटों में रहकर झील का आनंद उठा सकते हैं।
7- नेहरू पार्क, कानुटुर खाना, चारचीनारी आदि द्वीपों तथा हज़रत बल की सैर भी इन शिकारों में की जा सकती है।
8- इसके अतिरिक्त दुकानें भी शिकारों पर ही लगी होती हैं और शिकारे पर सवार होकर विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ भी खरीदी जा सकती हैं।
9- तरह तरह की वनस्पति झील की सुंदरता को और निखार देती है। कमल के फूल, पानी में बहती कुमुदनी, झील की सुंदरता में चार चाँद लगा देती है।
10- सैलानियों के लिए विभिन्न प्रकार के मनोरंजन के साधन जैसे कायाकिंग (एक प्रकार का नौका विहार), केनोइंग (डोंगी), पानी पर सर्फिंग करना तथा ऐंगलिंग (मछली पकड़ना) यहाँ पर उपलब्ध कराए गए हैं।
11- डल झील में पर्यटन के अतिरिक्त मुख्य रूप से मछली पकड़ने का काम होता है।

संकलन कर्ता- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

यूसमर्ग 67 भाग-01

1- युसमर्ग (Yusmarg) या युशमर्ग भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य के बडगाम ज़िले में स्थित एक नगर व पर्वतीय पर्यटक स्थल है।

2- यह अपने बड़े और सुंदर मर्ग (घास का मैदान) के लिए जाना जाता है, जिसमें चीड़ और सनोबर के कई झुरमुट हैं। कुछ लोगों में मान्यता है कि कभी ईसा मसीह यहाँ आकर रहे थे, जिस से इस स्थान का नाम पड़ा है।

3- दूध गंगा नदी इस स्वर्गीय स्थान से होकर बहती है, जिससे इसकी सुंदरता और बढ़ जाती है।

4- गर्मियों में युसमर्ग के मैदान जंगली फूलों से भर जाते हैं, जो प्रकृति प्रेमियों और फोटोग्राफरों के लिए एकदम सही स्थान बन जाता है।

5- सर्दियों के मौसम में, पूरी घाटी स्कीइंग और स्नोबोर्डिंग के लिए एक स्वर्ग बन जाती है, जहां बर्फ से ढके पहाड़ों में ये खेल खेले जाते हैं।

6- कश्मीरी हस्तशिल्प जैसे पश्मीना शॉल, कालीन और जटिलता से बनाए गए लकड़ी के सामान लोकप्रिय स्मृति चिन्ह हैं, जो इस क्षेत्र की कलात्मकता को दिखाते हैं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

युसमर्ग 68 भाग-02

7- पारंपरिक कश्मीरी व्यंजनों जैसे वाज़वान - एक बहु-कोर्स भोजन, कहवा - एक स्थानीय रूप से बनाई गई हरी चाय, और रोगन जोश - एक मसालेदार मांस व्यंजन का आनंद लेना आपको यादगार रहेगा और साथ ही कश्मीर के स्वाद का अनुभव कराएगा।

8- इसमें पीरपंजाल रेंज की कुछ सबसे ऊंची चोटियाँ भी हैं जैसे कि टाटाकोटी 4725 मीटर और सनसेट पीक 4746 मीटर। शक्तिशाली नदी दूध गंगा इस गंतव्य को और भी रोमांचकारी बनाती है।

9- थोड़ा आगे, पहाड़ियों के बीच एक झील, नीलनाग है। पहाड़ियों में कई चोटियाँ हैं, जैसे तत्ता कुट्टी, संग सफ़ेद, आदि।

10- युसमर्ग से लगभग 13 किमी की दूरी पर चरार-ए-शरीफ़ है, जो संत शेख नूर-उद-दीन या नुंद रेशी का मज़ार है। युसमर्ग अपने सुंदर घास के मैदानों, एक जगमगाते पानी के जलाशय और यूरोपीय आल्प्स जैसे पहाड़ों से पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

चंदनवाड़ी 69 भाग-01

1- चंदनवारी जम्मू और कश्मीर के अनंतनाग जिले में पहलगाम से 16 किमी दूर स्थित एक खूबसूरत जगह और हिल स्टेशन है ।

2- यह प्रसिद्ध अमरनाथ यात्रा के लिए आधार शिविरों में से एक है, दूसरा सोनमर्ग से बालटाल है।

3- पहलगाम से चंदनवारी तक की सड़क पर देवदार और चीड़ के घने जंगल और खूबसूरत घाटियाँ हैं ।

4- यह चंदनवारी से लेकर शेषनाग झील तक ट्रैकिंग के अवसर प्रदान करता है, जहाँ से लुभावने परिदृश्यों का नज़ारा दिखता है।

5- यहाँ कुछ प्रसिद्ध आकर्षण हैं, जैसे बेताब घाटी और अरु घाटी।

6- यहाँ 'चंदनवारी ग्लेशियर' नामक एक छोटा ग्लेशियर है जहाँ पर्यटक स्लेज की सवारी का आनंद ले सकते हैं। आप यहाँ कई यात्रा गतिविधियों में भाग ले सकते हैं, जिनमें ट्रैकिंग, स्नो स्लेजिंग और घुड़सवारी शामिल हैं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

चंदनवाड़ी 70 भाग-02

7- चंदनवाड़ी पवित्र अमरनाथ यात्रा के आरंभिक बिंदु के रूप में प्रसिद्ध है; अमरनाथ गुफा मंदिर की यात्रा यहीं से शुरू होती है।

8- यहाँ से आप शेषनाग, पंचतरणी और अंततः अमरनाथ गुफा सहित लोकप्रिय स्थानों से होते हुए आगे बढ़ सकते हैं।

9- यहीं पर लिद्दर नदी है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

लिद्दर नदी: यह एक शानदार जल निकाय है जो पहलगाम के मनमोहक परिदृश्यों से होकर बहती है। यह नदी कोलाहोई ग्लेशियर पर 4,653 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और 73 किमी लंबी है।

10- यहाँ पर स्थित पोशवान पार्क हजार किस्म से अधिक फूल और पौधों के लिए जाना जाता है। मनमोहक पहाड़ों के बीच में होने के चलते यहां हर समय सैलानी घूमने पहुंचते रहते हैं।

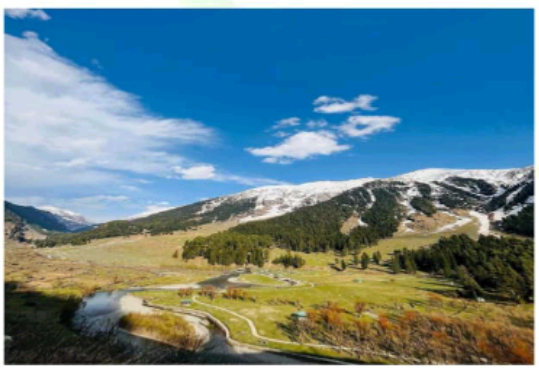

भारत दर्शन

वुलर झील

71

भाग-01

1- वुलर झील (Wular Lake) भारत के जम्मू और कश्मीर प्रदेश के बांडीपोरा ज़िले में स्थित एक मीठे जल की झील है।

2- यह भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है।

3- यह झेलम नदी के मार्ग में आती है और झेलम इसमें पानी डालती भी है, और फिर आगे निकाल भी लेती है।

4- मौसम के अनुसार इस झील के आकार में बहुत विस्तार-सिकोड़ होता रहता है - इसका अकार ३० वर्ग किमी से २६० वर्ग किमी के बीच बदलता है। अपने बड़े अकार के कारण इस झील में बड़ी लहरें आती हैं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

5- तुलबुल परियोजना इसी झील पर स्थित है।

6- प्राचीनकाल में 'महापद्म देवता' इस झील के अधिदेवता थे और उनके नाम पर इस झील को 'महापद्मसर' कहा जाता था।

7- झील का अकार बड़ा होने से यहाँ दोपहर में बड़ी लहरें उठती हैं जिस से इसकी शांत सतह पर देखते-ही-देखते ऊँची और ख़तरनाक लहरे उठने लगती हैं। संस्कृत में इन कूदती हुई लहरों को 'उल्लल' कहा जाता है और यही नाम विकृत होकर 'वुलर' पड़ गया।

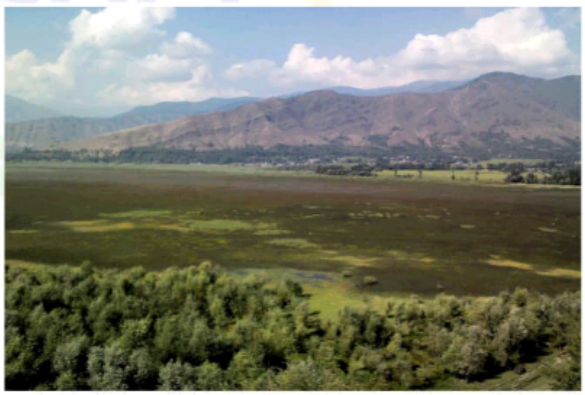

भारत दर्शन

वुलर झील 72 भाग-02

8- वुलर के पूर्वोत्तरी कोने में ज़ैनुल लंक नामक एक द्वीप है ('लंक' कश्मीरी भाषा में 'द्वीप' के लिए शब्द है)। यह एक कृत्रिम द्वीप है जो सन् १४४४ में कश्मीर के सुलतान ज़ैन-उल-अबदीन ने बनवाया था।

9- वे अपनी धार्मिक सहनशीलता के लिए जाने जाते थे और उन्हें हिन्दू व मुस्लिम कश्मीरी लोग इज़्ज़त से 'बुड शाह' (यानि बड़े शाह या महान शाह) के नाम से याद करते हैं। १५वीं सदी के कश्मीरी इतिहासकार जोनराज के अनुसार यह द्वीप बुड शाह ने नाविकों को वुलर में तूफ़ानी स्थितियों में आश्रय देने के लिए बनवाया था।

10- घटता आकार एवं क्षमता: झील की जल सतह का क्षेत्रफल वर्ष 1911 में 89.59 वर्ग किलोमीटर से घटकर वर्ष 2013 में 15.73 वर्ग किलोमीटर रह गया है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

11- जैव विविधता हॉटस्पॉट: यह वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की एक समृद्ध विविधता को आश्रय देता है, जिसमें स्किजोथोरैक्स (Schizothorax) या 'स्नो ट्राउट' (Snow Trout) जैसी मछली प्रजातियाँ भी शामिल हैं।

12- हिमालयन मोनाल, शॉर्ट-टोड ईगल और ब्लैक-ईयर्ड काइट जैसी प्रजातियों सहित समृद्ध जैव विविधता का क्षेत्र है।

भारत दर्शन

नागिन झील 73 भाग-01

1- नागिन झील जम्मू और कश्मीर के श्रीनगर शहर की डल झील से लगभग 6 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

2- यह झील आसपास के क्षेत्र में 'ज्वैल इन द रिंग' के नाम से काफ़ी विख्यात है, जो चारों तरफ से पेड़ों से घिरी हुई है।

3- नागिन झील 'डल झील' से एक पतले सेतु द्वारा अलग है।

4- डल झील का यह सबसे छोटा तथा सबसे सुंदर भाग है, जो एक रास्ते द्वारा विभाजित है तथा हज़रत बल से कुछ ही दूरी पर है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

5- यह डल झील की तुलना में काफ़ी छोटी है, लेकिन शहर की भीड़-भाड़ से दूर होने के कारण यहाँ पर काफ़ी शान्ति रहती है।

6- विभिन्न प्रकार के पेड़ नागिन झील के किनारे दीवार की तरह खड़े हुए हैं, जिससे इसकी सुंदरता में चार चाँद लग जाते हैं।

भारत दर्शन

नागिन झील 74 भाग-02

7- यहाँ सूर्यास्त का दृश्य बहुत ही सुहावना होता है तथा आसपास का दृश्य किसी का भी मन मोह लेने की क्षमता रखता है।

8- नागिन झील के मुख्य आकर्षण का केन्द्र है, यहाँ के हाउसबोट। सैलानी इन हाउसबोटों में रहकर इस ख़ूबसूरत झील का आनंद उठा सकते हैं। सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

9- यहाँ आने वाले लोग इस झील में अन्य झीलों की अपेक्षा स्वीमिंग करना काफ़ी पसंद करते हैं, क्योकि झील की गहराई अपेक्षाकृत कम है और पानी भी कम प्रदूषित है।

10-साहसिक पर्यटकों के लिए यहाँ कई वॉटर स्पोर्टस, जैसे- स्कीइंग और फाइबरग्लास सेलिंग का भी इंतजाम है।

11- झील के किनारे पर एक बार और एक चाय पवेलियन भी स्थित है, जिसे 'नागिन क्लब' के नाम से जाना जाता है। यह जगह पर्यटकों को आराम प्रदान करवाती है।

भारत दर्शन

शंकराचार्य मंदिर 75 भाग-01

1- शंकराचार्य मंदिर या ज्येष्ठेश्वर मंदिर भारत के केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर की कश्मीर घाटी में श्रीनगर में ज़बरवान पर्वतमाला की चोटी पर स्थित एक हिंदू मंदिर है। यह भगवान शिव को समर्पित है।

2-ऐतिहासिक और पारंपरिक रूप से इस संरचना को कश्मीर का सबसे पुराना मंदिर माना जाता है। यह एक पहाड़ी पर स्थित है जो पर्मियन काल के दौरान ज्वालामुखी गतिविधि द्वारा निर्मित एक अच्छी तरह से संरक्षित पंजाल जाल है।

3- कश्मीरी हिंदुओं का दृढ़ विश्वास है कि मंदिर का दौरा आदि शंकराचार्य ने किया था ।और तब से यह उनके साथ जुड़ा हुआ है; इस तरह मंदिर और पहाड़ी को शंकराचार्य नाम मिला।

4- यहीं पर साहित्यिक कृति सौंदर्य लहरी की रचना की गई थी। इसकी रचना आदि शंकराचार्य ने उस समय क्षेत्र में प्रमुख विश्वास, शक्ति को स्वीकार करने के बाद की थी , और शिव और शक्ति का मिलन, जैसा कि शक्तिवाद में है, श्री यंत्र के प्रतीकवाद में परिवर्तित हो गया ।

5- मंदिर एक ठोस चट्टान पर टिका हुआ है। 20 फीट (6.1 मीटर) ऊंचा अष्टकोणीय आधार शीर्ष पर एक चौकोर इमारत को सहारा देता है। अष्टकोण की प्रत्येक भुजा 15 फीट (4.6 मीटर) फीट है। सामने, पीछे और पार्श्व भाग सादे हैं जबकि अन्य चार पक्षों में न्यूनतम डिज़ाइन है लेकिन ध्यान देने योग्य कोण हैं।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

शंकराचार्य मंदिर 76 भाग-02

6- चौकोर मंदिर के चारों ओर की छत तक पहुँचने के लिए दो दीवारों के बीच एक पत्थर की सीढ़ी है। सीढ़ी के दूसरी ओर एक द्वार भीतरी भाग की ओर जाता है, जो एक छोटा और अँधेरा कक्ष है, जिसकी योजना गोलाकार है।

7- छत चार अष्टकोणीय स्तंभों पर टिकी है, जो एक शिवलिंग वाले बेसिन को घेरे हुए हैं जिसके चारों ओर एक साँप है।

8-मंदिर का उपयोग नियमित पूजा के लिए किया जाता है और अमरनाथ यात्रा के दौरान तीर्थयात्री मंदिर में आते हैं ।

9- यात्रा के दौरान, अमावस्या के चंद्र चरण पर , शिव की पवित्र गदा को मंदिर में लाने की संबंधित परंपरा निभाई जाती है।

10- मंदिर सरकार के पर्यटन सर्किट का हिस्सा है।

11- मंदिर और आस-पास की भूमि राष्ट्रीय महत्व का एक स्मारक है , जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तहत केंद्रीय रूप से संरक्षित है। धर्मार्थ ट्रस्ट ने 19वीं शताब्दी से इस क्षेत्र के अन्य लोगों के साथ मंदिर का प्रबंधन किया है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

77

अखनूर किला भाग- 01

1- अखनूर का किला जम्मू शहर से लगभग 28 किलोमीटर दूर, चिनाब नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है।

2- राजा तेग सिंह ने 1762 में इस किले का निर्माण शुरू किया था और राजा आलम सिंह ने इसे 1802 में पूरा किया था।

3- किले में नियमित अन्तराल पर बनी मीनारें और ऊँची दीवारें हैं। किले के प्रत्येक कोने पर दो मंजिला प्रहरीदुर्ग हैं। किला एक दीवार से दो भागों में बँटा हुआ है, और दक्षिण की ओर एक द्वार एक महल की ओर जाता है।

4- यह महल दो मंजिला है जिसमें भित्ति चित्र और मेहराबदार दीवार सजावट है।

5- उत्तर दिशा या नदी तट अखनूर किले के दो प्रवेश द्वार हैं।

6- 1982 में इसे भारतीय कानून के तहत राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया गया और अब भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण इसका प्रबंधन करता है।

मृदुला वर्मा, कानपुर देहात

भारत दर्शन

78

अखनूर किला भाग- 02

1- अखनूर किले का इतिहास 5000 साल पुराना है।
2- यह एक प्राचीन स्थल के ऊपर स्थित है जिसे स्थानीय रूप से "मांडा" के नाम से जाना जाता है।
3- इस स्थल पर पुरातात्विक उत्खनन से तीन अलग-अलग सांस्कृतिक काल खण्डों का पता चला है
4- अखनूर किला सैन्य शक्ति और शाही सुन्दरता, दोनों का प्रमाण है।
5- यह दो मंजिला इमारत उत्कृष्ट भारतीय सैन्य वास्तुकला का उदाहरण है।
6- इसकी सबसे खासियत इसका भव्य अग्रभाग है। इसकी परिधि के साथ ऊँची किलेबन्दी वाली दीवारें हैं।
7- जिनके बीच-बीच में बुर्ज बने हैं जो रक्षकों के लिए महत्वपूर्ण दृष्टि बिंदु प्रदान करते थे।

मृदुला वर्मा, कानपुर देहात

भारत दर्शन

भीमगढ़ किला 79 भाग-01

1- भीमगढ़ का किला जिसे सामान्यतः रियासी किला भी कहा जाता है, जम्मू से ६४ किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में रियासी ग्राम के निकट स्थित एक किला है।

2- पहाड़ी पर बना यह किला लगभग 150 मीटर ऊँचा है।

3- भीमगढ़ किला (भी रीसी किला) जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में रीसी शहर में स्थित एक ऐतिहासिक किला है।

4- एक पहाड़ी के ऊपर स्थित, किले ने अंजी नदी को नजरअंदाज कर दिया और इसके आसपास के 500 फीट ऊंचाई के साथ क्षेत्र का रणनीतिक दृश्य पेश किया।

5- यह किला मूल रूप से एक प्राचीन ईंट और मिट्टी दुर्ग थे और बाद में महाराजा रिषीपाल राणा के शासनकाल के दौरान पत्थर के साथ प्रबलित किया गया था - रियासी के संस्थापक।

6- यह तो मरम्मत और शाही परिवार के निवास के रूप में 1841 करने के लिए 1817 से डोगरा राजपूत वंश के महाराजा गुलाब सिंह जामवाल द्वारा पुनर्निर्मित किया और यह वह जगह है, जब यह अपने मौजूदा रूप मान लिया गया था।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

शंकराचार्य मंदिर 80 भाग-02

1- भीमगढ़ का किला जिसे सामान्यतः रियासी किला भी कहा जाता है, जम्मू से ६४ किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में रियासी ग्राम के निकट स्थित एक किला है।

2- पहाड़ी पर बना यह किला लगभग 150 मीटर ऊँचा है।

3- भीमगढ़ किला (भी रीसी किला) जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में रीसी शहर में स्थित एक ऐतिहासिक किला है।

4- एक पहाड़ी के ऊपर स्थित, किले ने अंजी नदी को नजरअंदाज कर दिया और इसके आसपास के 500 फीट ऊंचाई के साथ क्षेत्र का रणनीतिक दृश्य पेश किया।

5- यह किला मूल रूप से एक प्राचीन ईंट और मिट्टी दुर्ग थे और बाद में महाराजा रिषीपाल राणा के शासनकाल के दौरान पत्थर के साथ प्रबलित किया गया था - रियासी के संस्थापक।

6- यह तो मरम्मत और शाही परिवार के निवास के रूप में 1841 करने के लिए 1817 से डोगरा राजपूत वंश के महाराजा गुलाब सिंह जामवाल द्वारा पुनर्निर्मित किया और यह वह जगह है, जब यह अपने मौजूदा रूप मान लिया गया था।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

शालीमार 81 भाग-01

1- शालीमार बाग श्रीनगर में स्थित है, जो जम्मू और कश्मीर की राजधानी है।
2- यह एक प्रसिद्ध मुगल उद्यान है जो डल झील के किनारे स्थित है।
3- शालीमार बाग, जिसे शालीमार गार्डन के नाम से भी जाना जाता है, मुगल बादशाह जहांगीर ने अपनी पत्नी नूरजहां के लिए 1619 में बनवाया था।
4- यह 1619 ई. में बनवाया गया था और श्रीनगर से 15 किलोमीटर दूर स्थित है।
5- यह उद्यान कई स्तरों में बना है और इसमें सुंदर फव्वारे, नहरें और पेड़ हैं।
6- शालीमार बाग मुगल वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है और पर्यटकों के लिए एक लोकप्रिय स्थान है।

संकलन कर्ता- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

शालीमार बाग 82 भाग-02

7-शालीमार बाग़ भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य में विख्यात उद्यान है जो मुगल बाग का एक उदाहरण है।

8-इसे मुगल बादशाह जहाँगीर ने श्रीनगर में बनवाया था।

9- श्रीनगर भारत के उत्तरतम राज्य जम्मू एवं कश्मीर की ग्रीष्म-कालीन राजधानी है। इसे जहाँगीर ने अपनी प्रिय एवं बुद्धिमती पत्नी मेहरुन्निसा के लिये बनवाया था, जिसे नूरजहाँ की उपाधि दी गई थी।

9- इस बाग में चार स्तर पर उद्यान बने हैं एवं जलधारा बहती है।

10- इसकी जलापूर्ति निकटवर्ती हरिवन बाग से होती है।उच्चतम स्तर पर उद्यान, जो कि निचले स्तर से दिखाई नहीं देता है, वह हरम की महिलाओं हेतु बना था।

11- यह उद्यान ग्रीष्म एवं पतझड़ में सर्वोत्तम कहलाता है। इस ऋतु में पत्तों का रंग बदलता है एवं अनेकों फूल खिलते हैं।

12- इसके अन्य नाम शालीमार गार्डन, शालीमार बाग, फराह बख्श और फैज बख्श हैं, और आसपास का एक अन्य प्रसिद्ध तटरेखा उद्यान निशांत बाग है

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

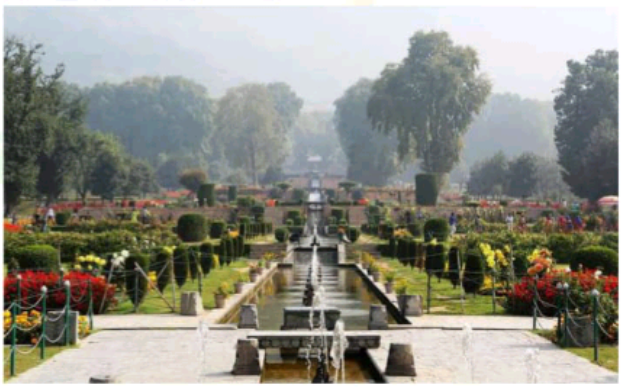

भारत दर्शन

लखनपुर किला 83 भाग-01

1- जम्मू-कश्मीर प्रवेश द्वार को देश भर में पहचान दिलाने वाला लखनपुर किला आज अपना गौरवमय इतिहास खो चुका है।

2- लखनपुर बस स्टेंड के साथ पुरानी बनावट से बना यह किला और उस पर लहराता राष्ट्रीय ध्वज राज्य में हर रोज प्रवेश करने वाले लाखों लोगों को अपनी ओर आकर्षित तो करता है परंतु इसकी पहचान मां काली मंदिर के रूप में ही रह गई है।

3- जसरोटिया वंश के राजा लखनपाल सिंह ने यह किला बनाया था। वह अंतिम राजवंश शासक थे। 15वीं सदी में जसरोटा के राजा संग्राम देव के छह बेटों में से एक लखनदेव थे।

4- मुगलों से पूरा क्षेत्र जीतने के बाद अन्य राजाओं और भाइयों की तरह जहां लखनदेव को यह क्षेत्र मिला था और उन्होंने अपना जहां किला स्थापित किया। उसी के नाम से लखनपुर पड़ा है। राजा के निधन के बाद किला कई दशकों तक बंद रहा।

5- किले में प्राचीन काली माता की मूर्ति भी हुआ करती थी। किला बंद होने के बाद मंदिर में इक्का-दुक्का लोग ही जाया करते थे। तीन दशक पहले बाबा पूर्ण गिरी जी महाराज ने किले में प्रवेश किया और माता काली की मूर्ति को किले से बाहर भव्य मंदिर का निर्माण कर प्रतिष्ठापित कराया।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

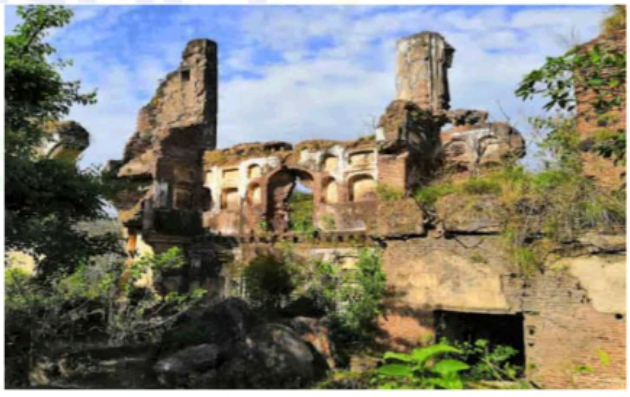

लखनपुर किला 84 भाग-02

6- अब किले की पहचान किले वाली माता से हो गई है। नवरात्र पर इस मंदिर में हजारों श्रद्धालु माथा टेकने तो आते हैं, लेकिन किले की ओर कोई नहीं जाता।

7- मंदिर के भीतर भगवान शंकर का प्राचीन मंदिर भी है।

8- लखनपुर किला परिसर दो छतों से युक्त अनियमित भूमि के एक बड़े टुकड़े से बना है। साइट पर प्रवेश सड़क के सामने उत्तर की ओर है जबकि किले में प्रवेश पश्चिम की ओर है।

9- लगभग 450 वर्ग मीटर के क्षेत्र में फैला किला ऊपरी छत पर स्थित है। किले के दक्षिण परिधि पर एक मंजिला इमारत है जो अस्तबल के रूप में काम करती है, जबकि पूर्व की ओर एक अस्थायी स्टोर और शेड का निर्माण किया गया है।

10- निचले स्तर पर कई संरचनाओं का निर्माण किया गया है, इनमें शामिल हैं: (ए) एक कृत्रिम पूल के भीतर एक अष्टकोणीय मंदिर (बी) एक वर्गाकार मंदिर की इमारत (सी) एक बड़ी सीधी संरचना (डी) एक छोटा शिव मंदिर (एलकेएम)।

11- लखनपुर का किला पत्थर की चिनाई से बना है जो लगभग चतुर्भुज योजना में है जिसमें चार कोनों पर बुर्ज हैं और प्रवेश द्वार के आसपास एक बुर्ज है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

तोशा मैदान 85 भाग-01

1- जम्मू कश्मीर के बडगाम जिले की खाग तहसील में स्थित, तोसा मैदान हिमालय पर्वतमाला के पहाड़ों में बसा एक अद्भुत, विशाल घास का मैदान है।

2- अपनी प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाने वाला, तोसा मैदान आगंतुकों को प्राकृतिक अजूबों, सांस्कृतिक विरासत और रोमांच का एक अनूठा मिश्रण प्रदान करता है।

3- खाग से लगभग 10 किलोमीटर दूर और घने जंगलों से घिरा, यह छिपा हुआ रत्न कश्मीर के सबसे मनोरम स्थलों में से एक है, जो प्रकृति में एक ऐसा पलायन प्रदान करता है जो कालातीत और जादुई दोनों लगता है।

4- प्राचीन काल में, यह क्षेत्र यात्रियों के लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग था।

5- 13,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित बसमई गली, तोसा मैदान तक जाने वाले मुख्य दर्रे के रूप में कार्य करती है।

6- इस ऊँचाई वाले मार्ग को ऐतिहासिक रूप से पंजाब के मैदानों तक पहुँचने का सबसे सुरक्षित और सुविधाजनक मार्ग माना जाता रहा है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

तोशा मैदान 86 भाग-02

7- एक अन्य महत्वपूर्ण दर्रा, पुंछ गली, तोसा मैदान के दाईं ओर स्थित है और पुंछ घाटी की ओर जाता है, जो इसे प्राचीन कश्मीर में एक महत्वपूर्ण संपर्क बिंदु बनाता है।

8- तोसा मैदान इस क्षेत्र का सबसे बड़ा घास का मैदान है, जो लगभग 3 मील लंबा और 1.5 मील चौड़ा है, और ऊँचे देवदार के पेड़ों से घिरा है जो एक विस्मयकारी, हरा-भरा किनारा बनाते हैं।

9- ठंडी, ठंडी हवा और लुभावने मनोरम दृश्यों का संयोजन तोसा मैदान को शांति और प्राकृतिक सुंदरता की तलाश करने वाले पर्यटकों के लिए एक आदर्श स्थान बनाता है।

10- गर्मियों के दौरान, यह घास का मैदान गुज्जर समुदाय और स्थानीय चरवाहों के साथ जीवंत हो उठता है, जो इस क्षेत्र में डेरा डालते हैं।

11- घास के मैदान के चारों ओर फैले देवदार के विशाल जंगल प्रकृति की सैर के लिए एकदम सही हैं, और बासमई गली और पुंछ गली जैसे ऊँचे दर्रे ट्रैकिंग और अन्वेषण के अवसर प्रदान करते हैं।

12- पहाड़ों में और आगे जाने की चाह रखने वालों के लिए, तोसा मैदान अधिक ऊबड़-खाबड़ इलाकों तक पहुँच प्रदान करता है और पीर पंजाल पर्वत श्रृंखला के मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

बलिदान सतम्भ 87 भाग-01

1- भारतीय राज्य जम्मू और कश्मीर के जम्मू में स्थित एक स्मारक है । 2- इसका निर्माण सैनिकों और पुलिसकर्मियों के वीरतापूर्ण कार्यों की स्मृति में किया गया था।

3- जो सीमाओं की संप्रभुता की रक्षा के लिए और जम्मू और कश्मीर में चल रहे उग्रवाद के दौरान लड़ाई में शहीद हो गए थे ।

4- देश का अपनी तरह का पहला स्तंभ भारतीय सेना द्वारा 2009 में 130 मिलियन रुपये की लागत से बनाया गया था।

5- यह एक सैनिक की बंदूक के आकार में साठ मीटर ऊंचा है।

6- देश भर के 52 स्तंभों पर 4877 शहीदों के नाम अंकित हैं। कुछ स्तंभ 543 सैनिकों को समर्पित हैं जो कारगिल युद्ध में शहीद हुए थे।

7- इन शहीदों में से 71 जम्मू और कश्मीर के विभिन्न जिलों से थे। बाद में, जम्मू और कश्मीर में चल रहे उग्रवाद के दौरान शहीद हुए सैन्य, अर्धसैनिक और पुलिस के कर्मियों, जिनकी संख्या 15,000 थी, को स्मारक में सम्मानित किया गया।

8- स्तंभ का आकार संगीन वाली राइफल जैसा है। स्तंभ की ऊँचाई आधार से लगभग 60 मीटर है और सूर्य की किरणें इसके अवरोधकों से होकर छनकर आती हैं।

9- आधार पर एक अखंड ज्योति है। शहीदों की ज्योति राइफल के बट के भीतर रखी है।

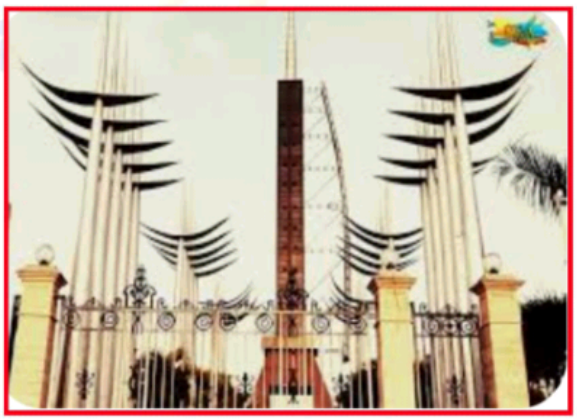

संकलन कर्ता- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

बलिदान सतम्भ 88 भाग-02

10- स्मारक का डिज़ाइन 5.56 मिमी इंसास राइफल के इर्द-गिर्द घूमता है ।
11- प्रवेश द्वार पर, दोनों ओर 6 मीटर ऊँची इंसास गोलियाँ लगी हैं।
12- यह स्मारक विशेष रूप से जम्मू और कश्मीर क्षेत्र में युद्धों और आतंकवाद विरोधी अभियानों के दौरान शहीद हुए सैनिकों को समर्पित है।
13- इसमें 1947-1948 का भारत-पाकिस्तान युद्ध , 1962 का भारत-चीन युद्ध , 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध , 1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध , 1999 का कारगिल युद्ध और 1990 के बाद से हुए आतंकवाद-रोधी अभियानों का विवरण शामिल है।
14- ये नाम स्मारक की परिधि के चारों ओर बने स्तंभों और अमर जवान ज्योति के चारों ओर की दीवारों पर अंकित हैं।
15- परिधि के आधे हिस्से पर परमवीर चक्र और अशोक चक्र विजेताओं के भित्ति चित्र हैं।
16- जम्मू, जम्मू और कश्मीर (केंद्र शासित प्रदेश) स्थित युद्ध स्मारक पर 2009 में जम्मू-कश्मीर में शहीद हुए नौ परमवीर चक्र, महावीर चक्र और वीर चक्र विजेताओं को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।
17- 1947-1948, 1962, 1965, 1971 और 1999 के युद्धों में शहीद हुए अन्य साथियों के साथ उनके नाम स्तंभों पर अर्धवृत्ताकार रूप में अंकित किए गए।
18- उनके नाम मध्य में अमर जवान ज्योति के पास भी प्रदर्शित हैं। परमवीर चक्र और अशोक चक्र के शहीदों को सम्मानित करते हुए एक अर्धवृत्ताकार दीवार पर भित्ति चित्र प्रदर्शित किए गए हैं।

संकलन कर्ता- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर

भारत दर्शन

बसोहली

89

भाग-01

1- बसोहली (पूर्व में विश्वस्थली) भारत के केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के कठुआ ज़िले में स्थित एक तहसील और कस्बे का नाम है ।

2- यह रावी नदी के दाहिने किनारे पर , 1876 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। इस कस्बे की स्थापना राजा भूपत पाल ने 1635 में की थी।

3- यह अपने महलों, जो अब खंडहर हो चुके हैं, और जीआई टैग प्राप्त पहाड़ी लघुचित्रों (पहाड़ी चित्रकला का बसोहली स्कूल) के लिए जाना जाता था।

4- बसोहली अपनी अनूठी ' बसोहली चित्रकला' के लिए प्रसिद्ध है ।

5- 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, बसोहली पहाड़ी चित्रकला के एक महान केंद्र के रूप में उभरा। इसकी मुख्य प्रेरणा वैष्णववाद है , और इनके विषय शास्त्रों और पुराणों से लिए गए हैं ।

6- बसोहली चित्रकलाओं को 'रंगों में कविताएँ' कहा जाता है।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर

भारत दर्शन

बसोहली 90 भाग-02

7- बसोहली शिवालिक की ऊबड़-खाबड़ ऊँची पहाड़ियों में बसा है। यह रावी नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है।

8- रणजीत सागर बाँध का एक हिस्सा बसोहली क्षेत्र में आता है।

9- जनसंख्या का धार्मिक वितरण इस प्रकार है - हिंदू 83.01%, मुस्लिम 16.38%, अन्य 0.61%।

10- बसोहली अपने चित्रों के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है, जिसे पहाड़ी चित्रकला का पहला स्कूल माना जाता है , और जो अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक बहुत विपुल कांगड़ा चित्रकला स्कूल में विकसित हुआ।11-चित्रकार नैनसुख ने बसोहली में अपना करियर समाप्त किया।

12- बसोली की लड़ाई 1702 में पहाड़ी राज्यों के राजपूतों की सहायता से सिखों और मुगल साम्राज्य के बीच बसोहली में लड़ी गई थी।

सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर